Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ

(सूरतुल बक़रा आयत :266)

अनुवाद: और उन लोगों के उदाहरण जो अपने माल अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहते हुए अपने नफ्सों में से कुछ को दृढ़ते देने के लिए खर्च करते हैं इस प्रकार के बाग़ जैसी है जो ऊंचे स्थान पर स्थापित हो और उस को तेज़ बारिश पहुंचे तो वह बढ़ कर अपना फला देता है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 36

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

25 ज़विल हज्जा 1439 हिजरी कमरी 6 तबूक 1397 हिजरी शमसी 6 सितम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

जहां तक किसी भी प्रकार की ख़ुदा की पैदा की हुई वस्तुओं का अस्तित्व है चाहे वह भौतिक रूप में हो या आध्यात्मिक, उन सबका उत्पन्न करने और पालन-पोषण करने वाला ख़ुदा है, जो हर समय उनका पालन-पोषण करता है, उनके यथायोग्य उनका प्रबंध कर रहा है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रत्येक मनुष्य कितना ही धनवान हो अपनी इच्छा के विरुद्ध मौत का प्याला पीता है। अत: इस सच्चे बादशाह के आदेश की धरती पर कैसी अदभुत झलक है कि जब आदेश आ जाता है तो कोई अपनी मृत्यु एक सैकण्ड भी नहीं रोक सकता। प्रत्येक भयानक और असाध्य बीमारी जब किसी को लग जाती है तो कोई हकीम या डाक्टर उसको दूर नहीं कर सकता। अत: ख़ूब सोचो कि ख़ुदा के राज्य की धरती पर यह कैसी अदभुत झलक है कि उसके आदेश निरस्त नहीं हो सकते । फिर क्योंकर कहा जाए की धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं, बल्कि भविष्य के किसी युग में आएगा । देखो इसी युग में ख़ुदा के आकाशीय आदेश ने प्लेग के साथ धरती को हिलाकर रख दिया ताकि उसके मसीह मौऊद के लिए एक निशान हो । अत: कौन है जो उसकी इच्छा के बिना उसका निवारण कर सके। फिर क्योंकर कह सकते हैं कि अभी धरती पर उसकी राज्य नहीं। हां एक व्यभिचारी उसकी धरती पर क़ैदियों की भांति जीवन व्यतीत करता है और वह चाहता कि वह कभी न मरे, परन्तु ख़ुदा का सच्चा राज्य उसका विनाश कर देता है और अंतत: वह मौत के जाल में फंस जाता है फिर क्योंकर कह सकते हैं कि अभी तक धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। देखो धरती पर प्रतिदिन ख़ुदा की आज्ञा से एक पल में करोड़ों लोग मर जाते हैं और उसकी इच्छा से करोड़ों ही पैदा हो जाते हैं, करोड़ों उसकी इच्छा से निर्धन से धनवान और धनवान से निर्धन हो जाते हैं । फिर क्योंकर कह सकते हैं कि अभी तक धरती पर परमेश्वर का राज्य नहीं। आकाश पर तो केवल फ़रिश्ते रहते हैं परन्तु धरती पर मनुष्य भी हैं और फ़रिश्ते भी, जो ख़ुदा के कार्यकर्ता और उसके राज्य के सेवक हैं जो मनुष्यों के विभिन्न कार्यों के संरक्षक बनाए गए हैं। वे हर समय परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं और अपनी रिपोर्टें भेजते रहते हैं। अत: क्योंकर कह सकते हैं कि धरती पर उसका राज्य नहीं, बल्कि ख़ुदा तो अपने धरती के राज्य से ही सर्वाधिक पहचाना गया है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य विचार करता है कि आकाश का रहस्य अभी अगोचर और अदृष्टनीय है बल्कि वर्तमान युग में लगभग समस्त ईसाई और उनके दार्शनिक आकाश के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते, इन्जील के अनुसार जिस पर ख़ुदा के राज्य का सारा दारोमदार रखा गया है। धरती तो वास्तव में हमारे पैरों तले एक पिण्ड है । नियति के सहस्त्रों मामले उस पर ऐसे प्रकट हो रहे हैं कि स्वयं समझ में आ जाता है कि यह समस्त परिवर्तन, उत्पन्न होना और मिटना किसी मालिक विशेष के आदेश से हो रहा है। फिर क्योंकर कहा जाए कि धरती पर अभी ख़ुदा का राज्य नहीं। बल्कि ऐसी शिक्षा ऐसे युग में जबकि ईसाइयों ने आकाशों के अस्तित्व का बड़े ज़ोर से इन्कार किया है नितान्त अनुचित है, क्योंकि इन्जील की इस प्रार्थना में स्वीकार कर लिया है कि अभी धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। दूसरी ओर समस्त ईसाई स्कालर्स ने सच्चे हृदय से यह स्वीकार कर लिया है अर्थात अपनी नवीनतम खोजों से यह निष्कर्ष निकाला है कि आकाश कोई वस्तु ही नहीं, अस्तित्वहीन है, कुछ भी नहीं। परिणामत: ख़ुदा का राज्य न धरती पर है न आकाश पर। आकाशों का तो ईसाइयों ने इन्कार कर दिया, धरती के राज्य से उनकी इन्जील ने ख़ुदा को उत्तर दे दिया अत: अब ईसाइयों के कथनानुसार ख़ुदा के पास न तो धरती का राज्य रहा न आकाश का। पर हमारे सर्वशक्ति सम्पन्न ख़ुदा ने सूरह फ़ातिह: में न आकाश नाम लिया न धरती का। हमें यह कहकर वास्तविकता से अवगत कराया कि वह रब्बुल आलमीन[1] है अर्थात जहां तक आबादियां हैं और जहां तक किसी भी प्रकार की ख़ुदा की पैदा की हुई वस्तुओं का अस्तित्व है चाहे वह भौतिक रूप में हो या आध्यात्मिक, उन सबका उत्पन्न करने और पालन-पोषण करने वाला ख़ुदा है, जो हर समय उनका पालन-पोषण करता है, उनके यथायोग्य उनका प्रबंध कर रहा है। समस्त जगत पर वह हर समय हर पल उसके पालन-पोषण करने, कर्मों के प्रतिफल की, बिनमांगे देने और प्रतिफल और दण्ड की प्रक्रिया जारी है। स्मरण रहे कि सूरह फ़ातिह: में मालिके यौमिद्दीन के वाक्य से केवल यह तात्पर्य नहीं है कि प्रलय के दिन प्रतिफल और दण्ड दिए जाएंगे, बल्कि क़ुर्आन शरीफ़ में बारम्बार और स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि क़यामत तो सम्पूर्ण अधिकारों पर आधिपत्य का समय है, पर एक प्रकार का आधिपत्य इसी संसार में जारी है जिसकी ओर आयत- يَجۡعَلۡ لَّكُمۡ فُرۡقَانًا यजअल्लकुम फ़ुरक़ानन (अन्फाल 30) संकेत करती है। अब यह बात भी सुनो कि इन्जील की प्रार्थना में तो प्रतिदिन की रोटी मांगी गयी है जैसा कि कहा गया है हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे । परन्तु आश्चर्य है कि जिस का राज्य अभी तक धरती पर नहीं आया वह रोटी क्योंकर दे सकता है । अभी तक तो समस्त खेत और समस्त फल उसकी आज्ञा से नहीं बल्कि स्वयं पकते हैं, वर्षा स्वयं होती है, अत: उसको क्या अधिकार है कि किसी को रोटी दे। जब धरती पर राज्य आ जाएगा तब उससे रोटी मांगनी चाहिए। अभी तक तो वह धरती की किसी वस्तु पर भी अधिकार नहीं रखता। जब इस सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेगा तब किसी को रोटी दे सकता है। इस समय उस से मांगना भी अनुचित है। तत्पश्चात यह कथन कि जिस प्रकार हम अपने ऋृण लेने वालों का ऋृण माफ़ कर देते हैं तू अपना ऋृण हमें माफ़ कर। इस परिस्थिति में यह भी उचित नहीं है क्योंकि धरती का राज्य अभी उसको प्राप्त नहीं और अभी ईसाइयों ने उसके हाथ से लेकर कुछ खाया नहीं, तो फिर ऋृण कौन सा हुआ। अत: ऐसे कंगाल ख़ुदा से माफ़ कराने की कुछ आवश्यकता नहीं और न उससे कुछ भय है, क्योंकि धरती पर अभी उसका राज्य नहीं और न उसके राज्य का दण्ड कोई रोब

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-8)

☆ मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात दुनिया की शांति है, जिसके बारे में मैं एक समय से बात कर रहा हूं और यही कारण है कि मैं दुनिया के विभिन्न देशों के प्रमुखों को जिस में अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, रूस, सऊदी अरब, ईरान और यहां तक कि पोप को ख़त लिखे हैं ताकि हम सभी परस्पर एकजुट हो व्यावहारिक शांति की स्थापना के लिए प्रयास करें।

मेरा विश्वास है कि धर्म अपनी शिक्षाओं का पालन करने के लिए आता है ने कि दूसरों के विचारों और परंपराओं पर पालन होने के लिए। सभी नबी उसी समय आए जब आध्यात्मिकता का पतन हो गया। और यह अब यही अवस्था है। आज हम लोग दुनिया की ओर सीमा से बहुत अधिक इच्छुक हो गए हैं। आध्यात्मिकता और धर्म अंधेरे का शिकार हो चुके हैं। कोई भी इसके बारे में सोचता नहीं है। यह केवल अहमदिया जमाअत है जो कहती है कि हमें सारी मानव जाति को अपने निर्माता के निकट करना है ताकि अल्लाह के अधिकारों को और बन्दों के अधिकारों को अदा किया जा सके। अत: मैं तो प्रत्येक के साथ सहानुभूति रखता हूं। मैं किसी से नफरत नहीं करता हूं। अगर मैं कुछ नापसंद करता हूं, तो यह किसी आदमी की कोई क्रिया है, न कि व्यक्ति। अगर कोई चोर या हत्यारा है, तो मैं उसके कार्यों से बहुत नफरत करता हूं लेकिन इस व्यक्ति को नापसंद नहीं करता। मैं इस प्रकार के आदमी के लिए दुआ करता हूं कि वह अपना सुधार करे और अपने बुरे कामों से तौब: करे। यही मेरा धर्म है और हमें इस धर्म को फैलाना है।

अख़बार sydsvenskan के प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर के साथ इनट्रविय़ू, स्वीडिश राष्ट्रीय रेडियो के प्रतिनिधि का हुज़ूर अनवर के साथ इनट्रविय़ू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

11 मई 2016 (शेष)

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: प्राय दुनिया की स्थिति में एक व्याकुलता है। कुछ यूरोपीय देशों में, हमें कहा गया है कि हमें अपनी मस्जिदों आदि की सुरक्षा प्रबंधन करने के लिए कहा गया है। इसलिए जब भी अहमदी यहां इकट्ठा होते हैं, तो हर अहमदी को सुरक्षा के लिए पहचान पत्र सौंपा गया है, जिसे स्कैन किया जा सकता है और मस्जिद में प्रवेश किया जा सकता है। और यदि कोई बाहर का व्यक्ति मस्जिद में आना चाहता है, तो वह आ सकता है, लेकिन उसकी सुरक्षा जांच होगी। क्योंकि केवल अहमदी मुस्लिमों को ख़तरा नहीं हैं, बल्कि इस कट्टरपंथ के कारण सभी को खतरा है। यहां तक कि आपको भी जोखिम हो सकता है। हालांकि, हमारी मस्जिद आसानी से निशाना बन सकती हैं, इसलिए हमें चौकस रहना है।

उसके बाद, पत्रकार ने पूछा कि आप पाकिस्तान से हैं। क्या आप बिना किसी समस्या के पाकिस्तान जा सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ख़लीफा चुने जाने से पहले मैं पाकिस्तान में था, यहां तक कि पाकिस्तान में मेरे ख़िलाफ मुकदमा भी दायर किया गया था जिसके कारण मुझे कुछ दिनों तक जेल में रहना पड़ा। लेकिन मैंने इस के बावजूद पाकिस्तान नहीं छोड़ा था। लेकिन जब मेरा चुनाव जमाअत के मुखिया के रूप में हुआ तो मैं ने ख़ुद यह फैसला किया और जमाअत ने भी यह फैसला किया कि मैं पाकिस्तान की बजाय लंदन में रहूं। क्योंकि पाकिस्तान का कानून हमारी जमाअत के मुखिया या किसी भी अन्य अहमदी को इस बात की अनुमति नहीं देता है कि वे अपनी मान्यताओं का पालन कर सकें या उन की तब्लीग़ कर सकें। मैं वहां कानून के अनुसार न तो नमाज़ें पढ़ा सकता हूं न ख़ुत्बे दे सकता हूं। और न ही अपने आप को मुसलमान सह सकता हूं।

*** पत्रकार ने कहा कि इसका मतलब है कि पाकिस्तान में इस्लाम की केवल एक ही परिभाषा है।**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : वे कहते हैं कि हम लोग मुर्तद हैं और वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं से भटक गए हैं इसलिए वे हमें मुसलमान नहीं समझते और यही कारण है कि उन्होंने संसद में हमारे ख़िलाफ कानून बना दिया। इसलिए जब भी मैं पाकिस्तान जाऊं तो वहां ऐसे कानून मौजूद हैं जिन के कारण कोई भी मौलवी पुलिस स्टेशन जा कर मेरे ख़िलाफ मुकदमा चला सकता है। मैं नमाज़ नहीं पढ़ा सकता यहां तक कि अस्सलामो अलैकुम नहीं कर सकता।

पत्रकार ने कहा कि क्या आप दौरे पर पाकिस्तान जा सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि मैं अगर पाकिस्तान जाऊं तो वहां जाकर क्या काम करूंगा? मैं हर शुक्रवार को ख़ुत्बा देता हूं, जो दुनिया भर में हमारे टीवी चैनल के माध्यम से सुना जाता है। तो अगर मैं वहां जाता हूं, तो मैं नमाज़ नहीं पढ़ा सकता। मैं ख़ुत्बे नहीं दे सकता और मैं ख़ुद को एक मुसलमान के रूप में नहीं कह सकता। मैं इन चीज़ों को कैसे मना कर सकता हूं जिन पर मेरा ईमान है?

पत्रकार ने अन्तिम सवाल पूछा कि आप हर साल एक शान्ति संगोष्ठी आयोजित करते हैं। क्या शांति आपकी जमाअत के लिए बड़ी बात है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह समस्या नहीं है, बल्कि यह हमारी जमाअत के विभिन्न प्रोग्रामों में से एक है कि हम हर साल शान्ति संगोष्ठी का आयोजन करते हैं और बड़ी संख्या में ग़ैर-अहमदी और ग़ैर-मुस्लिम लोग शामिल होने के लिए आते हैं। वहां राजनेता भी आते हैं और लोगों को संबोधित करते हैं, और मैं भी लोगों को संबोधित करता हूं और इस्लाम की सही तस्वीर प्रस्तुत करता हूं और वर्तमान युग के मुद्दों के बारे में बात करता हूं। इसके अलावा, हमारी जमाअत का सबसे बड़ा वार्षिक जलसा का आयोजन है और यह हर देश में आयोजित होता है और ब्रिटेन में भी आयोजित किया जाता है। चूंकि यहां मैं ब्रिटेन में उपलब्ध होता हूं इसलिए इसे अन्तर्राष्ट्रीय जलसा माना जाता है। जिसमें 35 से 40 हज़ार लोग शामिल होते हैं और यह तीन दिनों तक जारी रहता है। इसमें कुछ ग़ैर-अहमदी और ग़ैर-मुस्लिम मेहमान भी शामिल होते हैं लेकिन उनमें से अधिकतर अहमदी होते हैं।

इनट्रविय़ू के अंत में, पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का धन्यवाद किया।

अख़बार sydsvenskan के प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर के साथ इनट्रविय़ू

इस के बाद दक्षिण में सबसे बड़े समाचार पत्र सिडवेन्स्स्कन ने हुज़ूर अनवर

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की कृपा के साथ आज हम एक और जलसा सालाना में शामिल होने की तौफीक पा रहे हैं। सब को जलसा के तीन दिनों में दिनों में आध्यात्मिक माहौल का लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। जलसा के कार्यक्रमों को ख़ामोशी और सावधानी से सुनना चाहिए, तभी जलसा में शामिल होने का फायदा होगा। तभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के जलसा के आयोजन के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे।

काम करने वालों को हमेशा याद रखना चाहिए कि मेहमानों का व्यवहार जैसा भी हो काम करने वालों को उच्च आचरण धारण करना चाहिए तथा उन की भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए।

यह बिल्कुल सही है कि अहमदी चाहे मेहमान है या मेज़बान उसे नैतिकता धारण से करनी चाहिए। लेकिन जो लोग जलसा के मेहमानों की सेवा करने के लिए ख़ुद को पेश करते हैं उन्हें अधिक अच्छा आचरण दिखाना चाहिए।

काम करने वालों को विशेष रूप से यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कराहट रहनी चाहिए।

जलसा के प्रबंधकीय कामों के करने के लिए एक नियमित प्रणाली है। कई विभाग हैं जो इसके कार्यों में सुविधा पैदा करने के लिए बनाए गए हैं। अगर किसी मेहमान को किसी विभाग में कमी नज़र आती है या जिस तरह उसका हक है कि आतिथ्य होना चाहिए या उसका मानना है कि उस का आतिथ्य इस प्रकार हो और वह नहीं हो रही तो बजाय काम करने वालों से उलझने के सिर्फ विभाग के इन्चार्ज को लिख दें।

जलसा में शामिल वालों को होने को इस बात की ओर भी ध्यान देना चाहिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि इस्लाम का एक आचरण यह भी है मोमिन बेकार और व्यर्थ बातों को छोड़ दे और यह जलसा जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप से अल्लाह के लिए जलसा करार दियाहै इस में तो प्रत्येक प्रकार की व्यर्थ बातों और समय के नष्ट होने से परहेज़ करना चाहिए। या समय के बर्बाद करने से बचना चाहिए।

प्रशिक्षण और धर्म से जुड़ने के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात इबादत है और इसके लिए हमें पांच समय की नमाज़े फर्ज़ की गई हैं सुरक्षात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने माहौल और जलसा गाह के अन्दर भी और बाहर भी अपने माहौल पर नज़र डालें।

जलसा सालाना के हवाले से मेज़बानों और मेहमानों को महत्वपूर्ण तथा प्रमुख नसीहतें

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल
अज़ीज़, 3 अगस्त 2018 ई. स्थान - हदीकतुल महदी आलटन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अलहम्दो लिल्लाह अल्लाह तआला की कृपा के साथ आज हम एक और जलसा सालाना में शामिल होने की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। कुछ लोग पहली बार जलसा में शामिल हो रहे हैं। ऐसे कई लोग हैं जिनके पास यात्रा और वीज़ा की सुविधाएं हैं, और वे वर्षों से जलसा में शामिल होते आ रहे हैं। यू.के के रहने वाले इस प्रकार के भी भी लोग हैं जो पहली बार जलसा में शामिल हो रहे हैं। उन्हें यहां आए हुए थोड़ा समय हुआ है यहां आएं या कुछ बच्चे हैं जो अपने होश में पहली बार जलसा के माहौल से लाभ उठाने वाले होंगे। इस लिए सब को जलसा के तीन दिनों में दिनों में आध्यात्मिक माहौल का लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। जलसा के कार्यक्रमों को ख़ामोशी और सावधानी से सुनना चाहिए, तभी जलसा में शामिल होने का फायदा होगा। तभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के जलसा के आयोजन के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे।

जैसा कि सभी जानते हैं कि जलसा की सब व्यवस्थाएं या लगभग नब्बे प्रतिशत विशेष रूप से जो जलसा के दिनों के बारे में व्यवस्थाए हैं लोग स्वयं सेवा द्वारा ही करते हैं। इसलिए कुछ कार्यों में कमियां और कमज़ोरियां होती हैं। लेकिन उन दोषों और कमजोरियों को हम सभी को ठीक करना और निकालना है। जहां श्रमिक अपने कार्यों को ठीक करते समय अपने कार्यों को ठीक करने का प्रयास करेंगे, वहां मेहमान भी शामिल होने वाले भी, इन कमियों और कमजोरियों को दूर करें, और जहां कहीं भी काम करने वालों को सहायता की ज़रूरत हो वहां ख़ुद बढ़ कर काम करने के लिए अपने आप को पेश करें। जमाअत में इकाई केवल तभी पैदा हो सकती है जब हम एक-दूसरे के बोझ उठा रहे हों और जरूरत पड़ने पर मदद करें। अत: इस मूल बात को मेहमानों और मेज़बानों दोनों को याद रखना चाहिए।

आम तौर पर, मैंने श्रमिकों और मेजबानों की ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों के बारे में एक सप्ताह पहले ख़ुत्बा में उल्लेख किया था, और मेहमानों को उन के फर्ज़ों के बारे में जलसा वाले दिन के ख़ुत्बा में कुछ बातें कहता हूं। हमारे जलसों की बल्कि हमारे जमाअत के निज़ाम की भी यही विशेषता है कि या हम आपस में प्यार मुहब्बत से तभी रह सकते हैं जब प्रत्येक अपने अधिकारों और कर्तव्यों को अदा करने वाला हो और इस को समझने वाला हो। बहरहाल आज में दोने को ही कुछ बातें कहूंगा। और उन को ध्यान दिलाऊंगा।

कार्यकर्ताओं को मैंने पिछले ख़ुत्बा में कुछ नहीं कहा था लेकिन पिछले रविवार को जो जलसा की व्यवस्था का निरीक्षण होता है इसमें ध्यान दिला दिया था कि उनका व्यवहार कैसे होने चाहिए और कैसे उन्हें काम करना है। अल्लाह तआला की कृपा से एक लम्बे समय तक यह काम करने वाले या

कहना चाहिए कि यहां के काम करने वाले प्राय ड्यूटियां देते आ रहे हैं। इस लिए जहां तक काम समझने और काम को उत्तम कूप से करने का प्रश्न है यहां के काम करने वाले अब काफी समझदार हो गए हैं। और प्रत्येक वर्ष नए शामिल होने वाले काम करने वालों और बच्चों और नौजवानों को भी पहले काम करने वाले और इसी प्रकार अफसर अपने अनुभवों से लाभ उठाते हुए तरबियत करते हैं या तरबियत देते हैं। परन्तु कुछ बातों की जो बहुत अधिक ध्यान दिलाने योग्य हैं याद दिहानी करवानी पड़ती है। अत: कि इस समय जैसा कि मैंने कहा कि मेहमानों और मेज़बानो दोनों को कुछ बातें ध्यान दिलाना चाहूंगा।

सब से पहली बात काम करने वालों के लिए यह है कि उन्होंने उन लोगों की सेवा के करने के लिए अपने आप को पेश किया है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा जारी बल्कि अल्लाह तआला के आदेश से जारी किए गए जलसा में शामिल होने के लिए आए हैं। और सांसारिक मेले में शामिल होने के लिए नहीं आए बल्कि अपने आध्यात्मिक, ज्ञानीय और नैतिक मानकों को बेहतर बनाने के लिए इकट्ठे हुए हैं। और मैं आशा रखता हूं कि यही विचार जलसा में शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति की है और होनी चाहिए वरना इन का जलसा में शामिल होना व्यर्थ है। बहरहाल काम करने वालों को हमेशा याद रखना चाहिए कि मेहमानों का व्यवहार जिस तरह का भी हो, काम करने वालों को उच्च नैतिक आचरण का प्रदर्शन करते समय अपनी भावनाओं और विचारों का ख्याल रखना है। यदि कोई मेहमान या शामिल होने वाले आदमी भी ग़लत व्यवहार अपनाए तो कार्यकर्ता का काम है कि अपनी भावनाओं को नियंत्रित करे और उसी तरह उस भावना से जवाब न दे। जब हर कार्यकर्ता ने ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए मेहमानों की सेवा के लिए अपने आप को पेश कर दिया है तो ख़ुदा तआला के लिए ही कुछ मेहमानों के गलत व्यवहार भी सहने पड़ें तो सहन करें तभी अल्लाह तआला की ख़ुशी और प्रसन्नता को पाने वाले बन सकते हैं हम जिस नबीं के मानने वाले हैं उस नबीं का आचरण मेहमानों के बारे में क्या था? कभी कभी आने वाले मेहमान नहीं साल में एक बार जलसा के लिए आए बल्कि वे लोग जो शहर में रहने वाले थे, दैनिक मिलने वाले थे, उन्हें अगर कभी उनकी गरीबी की हालत की वजह से भोजन पर बुलाया या वैसे खाने पर बुलाया और वह लंबा समय आकर बैठ कर बातें करने लग गए और अपने आराम और अपने काम में विघ्न डालने वाले हो गए तो उन्हें कभी नहीं कहते थे कि समय से पहले न आओ मैं व्यस्त हूँ और खाना खाकर जल्दी चले जाओ कि तुम्हारे बैठे रहने की कारण से मैं कुछ भी नहीं कर सकता। ये लोगों की हालत को देख कर और अपने मेहमानों को सहन करने का धैर्य और साहस को देखते हुए, अल्लाह तआला ने मोमिनों को फरमाया कहा: فَيَسْتَحْيِۦ مِنكُمْ (अल-अहज़ाब 54) कि वह तुम्हारी भावनाओं का ध्यान रखते हुए तुम्हें मना करने से लज्जा करता है। परन्तु अल्लाह तआला को यह बात कहने में कोई रोक नहीं। अत: अधिक समय तक बिना किसी कारण के नबी के घर में बैठने के कारण, उसे तकलीफ न दो। अत: एक ओर तो अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च मेहमान नावज़ी के आचरण का वर्णन फरमाया। आचरण के उच्च होने का वर्णन फरमाया। तो दूसरी तरफ, मेहमानों को भी विशेष रूप से आदेश दिया कि मेहमान बन कर अपने अधिकार से बाहर न जाओ। मेहमानों की जो सीमाएं हैं उन के अन्दर रहने की ज़रूरत है। और मेहमानों को भी अपने मेहमान होने का अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए।

फिर ग़ैरों के साथ मेहमान नवाज़ी का स्तर था और उच्च हौसले का इस प्रकार का हौसला था कि एक इंसान हैरान रह जाता है आश्चर्य में पड़ जाता है। इसका उदाहरण हम देखते हैं कि जब एक गैर-मुस्लिम मेहमान बन कर आता है। आप इस की मेहमान नवाज़ी करते हैं और सुब्ह उठ कर जाते हुए वह बिस्तर गन्दा कर के चले जाते हैं। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम ने निवेदन किया, हमें भी सेवा करने का अवसर दें। हम उपस्थित हैं हुज़ूर क्यों कष्ट उठाते हैं आप फरमाते हैं कि वह मेरा मेहमान था इसलिए मैं ही उसका गंद धोऊँगा।

(उद्धरित मसनवी मौलवी मानवी दफतर पंचम पृष्ठ 20 से 24 अनुवादक काजी सज्जाद हुसैन अल्फ़ीसल प्रकाशक लाहौर 2006 ई) अत: है यह वह उच्चतम आदर्श जिसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। हमारे जलसा पर अपने भी आते हैं दूसरे भी आते हैं और सब आने वाले अच्छे आदर्श के मालिक हैं। या धर्म सीखने के लिए आते हैं या इस्लाम अहमदियत के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते हैं। मानवीय कमज़ोरियां तो होती हैं। अगर कोई ऊंच नीच हो भी जाए, किसी से ज़यादती हो भी जाए तो हम कह सकते हैं कि ये लोग बुरे आचरण वाले हैं और या उन की निय्यतें ठीक नहीं हैं। ये मानवीय कमज़ोरियां हैं जिस के कारण ऊंच नीच हो जाती है। अगर हो भी जाए तो सहन करना चाहिए। यह बिल्कुल ठीक है कि अहमदी चाहे मेहमान हो या मेज़बान उसे आचरण को प्रकट करना चाहिए। परन्तु जिन्होंने अपने आप को जलसा के मेहमानों के लिए पेश किया है। उन्हें ज़्यादा अधिक आचरण को प्रकट करना चाहिए। अगर काम करने वालों की तरफ धैर्य और अच्छे आचरण को प्रकटन होगा तो दूसरा खुद ही लज्जित हो जाएगा। अत: प्रत्येक ड्यूटी देने वाले प्रत्येक विभाग में जहां वे ड्यूटी दे रहा है उच्च आचरण को प्रकट करे। इसे इन दिनों में एक बहुत बड़ा चेलैन्ज समझ कर उच्च आचरण को प्रकट करे।

अल्लाह तआला कुरआन करीम में इस तरफ ध्यान दिलाते हुए फरमाया कि قُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا अलबक़रह:84) कि लोगों से अच्छी और नर्म बात करो। नर्मी से बात करो। अच्छी तरह बात करो। ये वह बुनियादी चीज़ है जो विवादों को खत्म करने और उच्च नैतिकता दिखाने के लिए ज़रूरी बात है। यह सिद्धांत केवल विशेष अवसरों के लिए है, बल्कि हमेशा के लिए है और जब मनुष्य को इस की आदत पड़ जाए तो तकलीफ और दुर्व्यवहार कभी हो ही नहीं सकते। अत: मेज़बानों और मेहमानों को यहां भी और हमेशा अल्लाह तआला के इस उपदेश को सामने रखना चाहिए और विशेष रूप से इन दिनों में तो ज़रूर इस पर अनुकरण करें। कि इस माहौल को विशेष रूप से सब ने मिल कर सुखद बनाना है ताकि जिस उद्देश्य के लिए यहाँ इकट्ठे हुए हैं। वे पूरा हो और वह है अपनी नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति में सुधार करना है। और यही आचरण यहां आने वाले ग़ैर-लोगों को भी इस्लाम के उच्च आचरण बताने का माध्यम बनेंगे। एक ख़ामोश तब्लीग़ है। मेहमान और काम करने वाले भी यह ख़ामोश तब्लीग़ करेंगे।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वज़न में अच्छे आतरण से अधिक भारी कोई वस्तु नहीं है। और फिर वह भी अच्छे आचरण का मालिक नमाज़ रोज़े के पाबन्द का स्तर प्राप्त कर लेता है।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब फी हुस्ने ख़ुल्क़ि हदीस 4798-4799)

अर्थात नेकियों की तौफ़ीक़ मिलती है। और विशेष रूप से जब अल्लाह तआला के लिए अच्छे कर्मों की तौफीक़ प्राप्त हो रही हो तो फिर इसकी इबादत की तरफ भी ध्यान पैदा होता है। अल्लाह तआला का धन्यवाद करने की तौफ़ीक़ पैदा होती है कि अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार मैं अच्छे आचरण का प्रदर्शन कर रहा हूँ और यही शुक्र इबादत की तरफ भी ध्यान दिलाता है। मानो एक नेकी अच्छे कर्मों के करने की तरफ भी तौफीक प्रदान करती चली जाती है। और फ्रि नेकी कई नेकियों के बच्चे देती चली जाती है।

इसलिए काम करने वाले विशेष रूप से यह सुनिश्चित करें कि जैसा भी किसी दूसरे का व्यवहार हो उन के चेहरों पर हमेशा मुस्कुराह रहनी चाहिए। इस बाहरी हालत का प्रभाव फिर दिल पर भी होता है और दिल में भी कोई सख्ती पैदा नहीं होगी और जब दिल में बेवजह कठोरता पैदा नहीं होगी तो ग़लत निर्णय भी नहीं होंगे जो कई बार जोश और क्रोध में हो जाते हैं।

आँ हज़रत पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आचरण के उच्चतम गुणवत्ता को वर्णन करते हुए एक सहाबी बयान फ़रमाते हैं कि मैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अधिक हंसता मुस्कराता चेहरा किसी का नहीं देखा।

(सुनन अत्तिरमज़ी अब्बवाबुल मनाकिब अध्याय हदीस 3641)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मानने वालों को यह नसीहत भी फरमाई कि नरमी करो क्योंकि जो नरमी से वंचित किया गया वह

नेकी से भी वंचित कर दिया गया है।

(सही मुस्लिम किताब बिर्रे हदीस 6598)

अब इस बात को अगर कार्यकर्ता और शामिल होने वाले सभी समझ लें तो तो इस माहौल की बरकतों के कारण ख़ैर तथा बरकतों से झूलियां भरने वाले हो बन जाएंगे। काम करने वाले अल्लाह तआला के फज़्ले से प्रत्येक मेहमान की सेवा करते हैं परन्तु अगर फिर भी किसी के दिल में यह विचार आ जाए कि अमुक आदमी को अधिक पूछा जा रहा है और मुझे कम तो इस विचार को भी दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। अर्थात अगर किसी के दिल में यह विचार आता है कि तो काम करने वाले इस विचार को दूर करें। परन्तु साथ है में जलसा में शामिल होने वालों से भी कहूंगा कि जलसा के इतने व्याप्क प्रबन्ध अल्लाह तआला के फज़्ल से जैसा कि मैंने कहा कि स्वय सेवकों के माध्यम से हो रहे हैं। यह कोई हमारे नौकर नहीं हैं। अर्थात बहुत अच्छे उहदों पर काम करने वाले हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमानों की सेवा करने की भावना से डूब कर सेवा कर रहे हैं। इसी प्रकार नौजवान हैं जो सेकैण्डरी स्कूलों तथा कालेजों में पढ़ रहे हैं। लड़कियां हैं लड़के भी हैं। इसी तरह बच्चे भी हैं। ये सब एक भावना से सेवा कर रहे हैं। इस लिए यदि कहीं छोटी मोटी कमियां और कमज़ोरियां देखें तो नज़र अंदाज़ करें। और एक उद्देश्य सामने रखें के केवल अल्लाह तआला और उस के रसूल और उस के धर्म की बातें सुनने के लिए यहां जमा हुए हैं। और जब यह उद्देश्य सामने होगा तो किसी प्रकार की शिकायत का प्रश्न ही नहीं उठता।जलसा के प्रबंधनकीय कामों के करने के लिए एक नियमित प्रणाली है। कई विभाग हैं जो इसके कार्यों में सुविधा पैदा करने के लिए बनाए गए हैं। अगर किसी मेहमान को किसी विभाग में कमी नज़र आती है या जिस तरह उसका हक है कि आतिथ्य होना चाहिए या उसका मानना है कि उस का आतिथ्य इस प्रकार हो और वह नहीं हो रही तो बजाय काम करने वालों से उलझने के सिर्फ विभाग के इन्चार्ज को लिख दें। इस वर्ष अगर कमी को न भी दूर किया जा सका तो अगले साल के लिए ध्यान रखा जाए जाएगा और हमारे जमाअत के निज़ाम की यही ख़ूबी है और होनी चाहिए कि जिन जिन कमियों की निशानदही हो उन को दूर करने के कोशिश की जाती है या कोशिश की जाए।

मेहमान नवाज़ी का एक मुख्य विभाग खाना बनाना भी है। जलसा के दिनों में लंगर के विशिष्ट भोजन हैं और वही पकाए जाते हैं वर्तमान में दुनिया में हर जगह जहां भी जलसे होते हैं या कम से कम उन स्थानों पर जहां पाकिस्तानी और भारतीय दोस्तों की बहुमत है। ऐसे कुछ खाद्य पदार्थ हैं जो विदेशियों के लिए विशिष्ट हैं। विदेशियों से मेरा अभिप्राय गैर-पाकिस्तानी या गैर-भारतीय हैं। इसमें अक्सर शामिल होने वाले जैसा कि मैंने कहा कि पाकिस्तानी या भारतीय क्षेत्र के लोग हैं इसलिए यह विशेष खाना आलू मांस और दाल लंगर में पकता है और रोटी। लेकिन पकाने वाले इस बात का भी ध्यान रखें कि ठीक है खाना तो हम ने अपनी इच्छा का खिलाना है इन को परन्तु पकाने वाले इस बात को ध्यान रखें कि खाना अच्छी तरह पकाया हो। विशेष कर के गोश्त अच्छी तरह पकाया गया हो। मुझे पता चला है कि कल गोश्त अच्छी तरह गला हुआ नहीं था। कल थोड़े मेहमान थे इसलिए अधिक शिकायत नहीं आई होगी। परन्तु अगर आज भी वही अवस्था है तो प्रबन्ध करने वालों को इस बारे में ध्यान पूर्वक सोचना चाहिए। अगर मांस की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी तो प्रशासन को अच्छी गुणवत्ता वाले मांस प्राप्त करने के लिए तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए। मुझे आशा है कि मेहमान तो इन्शा अल्लाह इस बारे में शिकायत नहीं करेंगे, लेकिन अगर वे शिकायत करें तो उनकी वैध शिकायत होगी। लेकिन क्रोध से शिकायत मत करें, बल्कि प्यार के साथ प्रबंध करने वालों को ध्यान दिला दें कि यह कमी है इस को पूरा करें। इस तरह भोजन भी नष्ट होता है और रिज़्क को भी हमें हिफाज़त करने का आदेश है।

फिर जलसा में शामिल लोगों के इस बात की ओर भी ध्यान देना चाहिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि इस्लाम एक अच्छा आचरण यह भी है कि मोमिन बेकार और व्यर्थ बातों को छोड़ दे।

(सुनन इब्ने माजा किताबुल फित्न हदीस 3976)

और यह जलसा जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शुद्ध रूप से अल्लाह तआला के लिए जलसा करार दिया है इस में तो हर प्रकार की व्यर्थ बातों और समय के बर्बाद करने से बचना चाहिए या समय बर्बाद करने से बचना चाहिए और जलसा के कार्यक्रमों को ध्यान से सुनें। वक्ता आप की पसंद के हैं या नहीं लेकिन भाषणों के विषय बहरहाल ऐसे रखे जाते हैं जो प्रत्येक के लिए फायदेमंद हैं और हर भाषण में कोई न कोई बात ऐसी है जो किसी न किसी के दिल को प्रभावित करती है। तो ध्यान से सुनें तो प्रभाव भी होगा। विशेष मजबूरी के जलसा गाह से उठ कर बाहर न जाएं। और जिस तरह इस समय हाज़री है जलसा के दौरान भी हर कार्यक्रम में ऐसी उपस्थिति होनी चाहिए ताकि बच्चों और युवाओं को भी जलसा के महत्त्व का अनुमान हो और वह भी अपने आप को धर्म के साथ जोड़ें और इसके लिए प्रयास करें। आज के सांसारिक परिवेश में, माता-पिता और युवाओं को धर्म के महत्त्व का एहसास होना चाहिए और इसके साथ माता-पिता का एक बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम है इस तरफ विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। हर मां और हर पिता को इसके लिए प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला उन सब को इस की तौफीक़ प्रदान करे।

तरबियत और धर्म से जुड़ने के संबंध में सबसे महत्त्वपूर्ण बात इबादत है और इसके लिए हमें पांच समय की नमाज़े फर्ज़ की गई हैं। जलसा के कार्यक्रमों और मुसाफिरों के कारण जो बहुत से लोग बाहर आ रहे हैं, हम आज नमाज़ें जमा कर रहे हैं। तो इन की भी पाबन्दी करनी ज़रूरी है।

ख़ुद भी पाबन्दी करें और बच्चों की भी नमाज़ के समय अगर यहाँ हदीकतुल महदी में हैं तो जरूर लाएं और फज्र की नमाज़ और मग़रिब और इशा की नमाज़ के समय अगर यहाँ नहीं हैं और अपने घरों में चले गए हैं वहाँ फिर निकटतम केंद्र या मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए ले जाएं। और मस्जिद से या केंद्र से घर दूर हैं तो घरों में जमाअत के साथ नमाज़ का प्रबन्ध होना चाहिए। इसी तरह, काम करने वाले भी जो नमाज़ों के समय में फारिग़ हैं आकर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करें। और जो ड्यूटी पर हैं वे ड्यूटी समाप्त कर के सब से पहले नमाज़ अदा करें। ड्यूटी लगाने वाली इंतज़ामिया या जो इन्चार्ज हैं उन को भी ध्यान रखना चाहिए कि ड्यूटी भी नमाज़ों के समय को सामने रख कर लगानी चाहिए। यह न हो कि ड्यूटी के समय में नमाज़ों का समय चला जाए। इस प्रकार की शिफ्ट होनी चाहिए कि बहरहाल एक शिफ्ट और दूसरी शिफ्ट को नमाज़ पढ़ने का अवसर मिल जाए। अगर हमारा नमाज़ों पर ध्यान नहीं तो हमारे सारे काम व्यर्थ हैं।

प्रशासनिक रूप से, मैं कुछ और बातें भी कहना चाहूंगा। जो लोग अपनी गाड़ियों में आते हैं वे प्रशासन के साथ मदद करें और जहां और जिस प्रकार गाड़ी पार्क करने के लिए कहा जाए उसी तरह करें। पार्किंग स्थल में कभी-कभी समस्याएँ होती हैं। कुछ ज़िद करते हैं और अपनी इच्छा से पार्किंग करने के लिए श्रमिकों के साथ भी उलझ पड़ते हैं। इस से प्रबंधन ख़राब होता है, और कभी-कभी यह बातें जोखिम का माध्यम भी बन जाती हैं। कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती हैं या यहां तक कि खतरे भी पैदा होते हैं। इसी तरह यहां जलसा स्थल के अलावा जो मस्जिद फज़्ल नमाज़ पढ़ने आते हैं इस बारे में कार्यकर्ताओं को तो मैंने रविवार को इस ओर ध्यान दिला दी थी कि वे डयूटियाँ दें लेकिन जो यहां आने वाले जलसा के शामिल होने वाले हैं हैं और जो मेहमान हैं जो इस क्षेत्र में जाकर नमाज़ पढ़ेंगे उन्हें भी यही याद रखना चाहिए कि जो मस्जिद फज़्ल नमाज़ पढ़ने आते हैं वे भी अपनी कारें ऐसी जगह खड़ी जहां पड़ोसियों के रास्ते न रुकें, उनके घरों के रास्ते न रुकें और उन्हें असुविधा न हो। रविवार को मैंने श्रमिकों को यह भी बताया कि हमारे पड़ोसियों ने शिकायत की है कि आप अपनी कारों को इस तरह से चलाते हैं कि हमारी सड़कें बंद हो जाती हैं। न हम अपनी कार बाहर नहीं निकल सकते हैं ने घर ला सकते हैं। कुछ ने तो इस हद तक व्यक्त किया है जिनके संबंध हैं सालों साल के दावत तथा उपहार देने जाते हैं या जलसा के दिनों में संपर्क के लिए जाते हैं कि तुम कहते हो कि ख़िलाफत हमारा मार्गदर्शन करती है और तुम ख़िलाफत की बड़ी बातें करते हो कि हम आज्ञा का पालन करते हैं या तो आपका ख़लीफा आपको

पड़ोसी के अधिकार के बारे में बताता नहीं है या तुम उससे उस की बात नहीं मानते। यह इस प्रकार की बात है जो हम में से प्रत्येक के लिए शर्मनाक है। मुझे तो इस बात ने बहुत शर्मिंदा किया है और बात उन की जायज़ है उचित है। अगर हम रुकते हैं, तो यही दो बातें हो सकती हैं। तो इस पर विशेष ध्यान दें। विशेष रूप से इसका ख्याल रखना चाहिए। बेशक अपने आप को परेशानी में डाल लें, लेकिन पड़ोसी के रास्ते को कभी न रोकें, उसे कष्ट न पहुंचाएं। इस्लाम जितना पड़ोसी के अधिकार स्थापित करने की हिदायत करता है कोई और धर्म इस तरह खुल कर इसकी हिदायत नहीं करता लेकिन इसके बावजूद अगर हम में से कुछ इस का पालन नहीं करते हैं तो शर्म योग्य बात है और वे गुनहगार हैं, विशेष कर के उन लोगों से मैं कहता हूं जो लंदन से बाहर आ रहे हैं और यूरोप से आ रहे हैं। जर्मनी आदि से अपनी कारों में आते हैं, वे खासकर के इस बात का ध्यान रखें। कुछ ऐसे हैं जो परवाह नहीं करते हैं और मुझे बताया गया है कि ड्यूटी पर खड़े नौजवान जब उन्हें ध्यान दिलाएं तो कुछ अनुचित व्यवहार भी करते हैं और ग़लत तरीके से बोलते हैं। एक तो ग़लत पार्किंग का अपराध कर रहे है, पड़ोसी के अधिकारों का अधिकार अपराध कर रहे हैं, फिर इस व्यवहार से बच्चों और युवाओं के दिल में शिष्टाचार और सम्मान को खत्म कर रहे हैं। फिर वे भी वैसे ही बात करेंगे। फिर बद तमीज़ी भी होगी तो उन्हें परीक्षा और परेशानी में क्यों डालते हैं। इसलिए, जो लोग इस तरह के व्यवहार दिखाते हैं उन का जलसा पर सफर कर के और खर्च कर करके आना व्यर्थ है। इस से बेहतर है कि वे न आएं और न केवल उन्हें कष्ट पहुंचा रहें हैं अल्लाह के आदेश का उल्लंघन कर रहे हैं बल्कि बच्चों की तरबियत को भी ख़राब कर रहे हैं। अत: भविष्य से इस बात का ख्याल रखें।

प्रशासनिक क्षेत्र विभागीय और स्वच्छता में विशेष ध्यान देने की भी आवश्यकता है। हमेशा अनुस्मारक करवाता हूं। सफाई भी ईमान का एक हिस्सा है इसलिए हमें हमेशा याद रखना चाहिए। मेहमान जब भी ग़ुस्ल खाने प्रयोग करते हैं, शौचालय उपयोग करते हैं तो साफ तथा सूखा कर आया करें। कुछ शिकायतें आती हैं कि इतना पानी होता है कि कोई अन्य व्यक्ति वापस नहीं जा सकता है। काम करने वालों का भी यह काम है लेकिन केवल उन्हीं पर न छोड़ें ख़ुद भी उन की मदद किया करें। इसी तरह सड़कों और रास्तों पर अगर गिलास आदि या टीन आदि को ई चीज़ नज़र आए या लिफाफे आदि गिरे हुए हों तो उन्हें उठाकर डसट बिन में डाल दिया करें। आज कल एक बात और बहुत ज़रूरी करने वाली है आजकल बारिश की कमी के कारण घास बहुत सूखी हो गई है, जिस को आग लगने का खतरा भी हो सकता है। यद्यपि इसे काट कर और उन्हें व्यवस्था करके सुरक्षित करने की कोशिश की गई है, लेकिन फिर भी कोई दुर्घटना हो सकती है। इसलिए, ड्यूटी वाले भी और मेहमान भी इस बात का विशेष ध्यान रखें कि ज़मीन पर कोई आग वाली चीज़ और चिंगारी इत्यादि न फेंकें। बहरहाल यह यह तथ्य है और तथ्य वर्णन कर देना चाहिए ताकि कमज़ोरियां दूर हों। अगर किसी को सिगरेट पीने की आदत है तो उसे वैसे भी इन दिनों में हदीकतुल महदी की सीमाओं से परे जाकर सिगरेट पीना चाहिए। लेकिन इस से यह न समझ लें कि मैं सिगरेट पीने के लिए अनुमति देता हूं और बुरा महसूस नहीं करता हूं। बहरहाल यह एक बुराई है और इसे दूर करने और इससे बचने की कोशिश करनी चाहिए। मैंने इसके बारे में एक ख़ुत्बा भी दिया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसे हराम तो करार नहीं दिया लेकिन इसे पसंद भी नहीं किया बल्कि कुछ अवसरों पर घृणा व्यक्त की है और इससे बचने की नसीहत फरमाई है ।

(मल्फूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 235)

और जो युवा इसमें नशीली चीज़ें डाल देते हैं कुछ को गलत समाज में जाकर आदत पड़ जाती है तो बहरहाल वर्जित है और गुनाह है।

फिर सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से जलसा गाह के अन्दर भी और बाहर भी अपने माहौल का ख्याल रखें। कोई शरारती तत्व कुछ भी गलत कर सकता है। किसी भी संदिग्ध चीज़ को देखें या किसी को भी संदिग्ध हरकत करते देखें तो शीघ्र ही प्रशासन को निकट खड़े ड्यूटि वाले को रिपोर्ट करें। महिलाएं भी यह ध्यान रखें कि कोई महिला भी चेहरे को ढक कर या नकाब पहने हुए जलसा गाह मेम न आए स्कैनिंग आदि भी सहीह रंग में हो। उनके चेहरे देखें और जलसा गाह के अंदर भी मुंह नंगे होने चाहिए और स्कैनिंग के लिए विशेष प्रबंध के कारण अगर मेहमानों को देर लगती है कुछ इंतजार करना पड़ता है तो उस असुविधा को सहन कर लें। सावधानी और सुरक्षा बहरहाल अधिक महत्त्वपूर्ण है।

महिलाओं द्वारा कुछ बार यह भी शिकायत आती है कि बच्चों की मार्क में तो कम शोर मचाते हैं और बच्चों वाली माताएं उन्हें तो कोई न कोई चीज़ देकर बहला देती हैं या बच्चे खेल रहे होते हैं या किसी चीज के खाने में व्यस्त होते और चुपचाप खेल रहे होते हैं लेकिन उन्हें चुप करा कर माताएं समझती हैं कि अब हमारा शोर करना ज़रूरी है इसलिए वे आपस में बातें करना शुरू कर देती हैं और कई बार यह भी है कि जलसा के भाषणों के दौरान बातें कर रही होती हैं और एक शोर पड़ा होता है और जो माताओं ऐसी हैं जो चुपचाप सुनना चाहती हैं उन्हें भी सुनने नहीं देतीं तो लज्ना और वहाँ ड्यूटी वालिआं इस बात का विशेष ध्यान रखें। बच्चों के शोर होने पर भी बच्चों के शोर को बर्दाश्त किया जा सकता है। माताओं का शोर नहीं। इसी तरह महिलाओं की तरफ से भी शिकायत है कि कई बार कुछ औरतें मैन मार्की में भी भाषणों के दौरान बिना कारण रहती हैं और चुप कराने वाली लड़कियों से ग़लत रंग में बात करती हैं और ग़लत जवाब उन्हें देते हैं जो किसी भी रूप में भी उपयुक्त नहीं है।

अल्लाह तआला सब को जलसा का अधिक से अधिक लाभ उठाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और इन सभी बातों और निर्देशों का पालन करने की भी ताकत प्रदान करे जो अभी मैंने दी हैं या अपने कार्यक्रमों में जो लिखी गई हैं। लेकिन एक बात याद रखें कि इन सभी निर्देशों पर हावी एक बात है जो प्रत्येक के लिए अनिवार्य है और अत्यंत आवश्यक है और वह दुआ है अत: जलसा की सफलता के लिए विशेष रूप से दुआ करें अल्लाह तआला केवल और केवल अपने फज़ल से जलसा को हर दृष्टि से बरकतों वाला फरमाए और हर बुराई से सुरक्षित रखे और हम सभी वे लाभ पाने वाले हों जिसे के लिए हम यहां एकत्र हुए हैं।

इसी तरह मैं यह भी बताना चाहता हूं कि रियू यू आफ रिलीजन्स के अधीन हमेशा की तरह इस साल भी टयूरन शरायड पर प्रदर्शनी का इन की मार्की में की गई थी। इसी प्रकार साथ ही अल-क़लम परियोजना भी थी। इसी प्रकार आर्काइव क्षेत्र के अधीन प्रदर्शन लगा हुआ था वह भी देखनी वाली चीज़ होगी जानकारी में वृद्धि होगी। इसी तरह इस बार तब्लीग़ विभाग यूके ने कुरआन मजीद पर एक प्रदर्शनी आयोजित की है। उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह वह भी लोगों के लिए जागरूकता का कारण होगी। इसी तरह, आज दो वेब साइट True islam और Rational Religon भी आरम्भ होगी। तब्लीग़ विभाग ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सीरत पर ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता भी रखी हुई है उसमें भी लोग शामिल हो रहे हैं यह भी एक सुविधा है जो कि आज जलसे से उन्होंने इसे शुरू किया है। बहरहाल ये इन दिनों नियमित जो प्रोग्राम जलसा गाह में होते हैं उन से अधिक बातें और प्रोग्राम हैं। इन प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों से भी लोगों को लाभ उठाना चाहिए। अल्लाह तआला सब शामिल होने वालों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की दुआओं से हिस्सा लेने वाला बनाए।

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पृष्ठ 1 का शेष

और दबदबा स्थापित कर सकता है । क्या मजाल कि वह किसी अपराधी को दण्ड दे सके, या मूसा के युग की अवज्ञाकारी क़ौम की भांति प्लेग से विनाश कर सके, या लूत की क़ौम की भांति उन पर पत्थरों की वर्षा कर सके, या भूकम्प, बिजली या किसी और प्रकोप से अवज्ञाकारियों का सर्वनाश कर सके, क्योंकि अभी ख़ुदा का राज्य धरती पर नहीं। चूंकि ईसाइयों का ख़ुदा ऐसा ही निर्बल है जैसा कि उसका बेटा निर्बल था और ऐसा ही अधिकारहीन है जैसा उसका बेटा अधिकारहीन था तो फिर उस से ऐसी प्रार्थनाएं करना व्यर्थ है कि हमें ऋण माफ़ कर। उसने कब ऋण दिया था जो माफ़ करे क्योंकि अभी तक तो उसका धरती पर राज्य ही नहीं। जब उसका धरती पर राज्य ही नहीं तो धरती पर हरियाली का होना, पेड़ पौधों का उगना उसकी आज्ञा से नहीं, और धरती की वस्तुएं उसकी नहीं बल्कि स्वयं ही है क्योंकि धरती पर उसका आदेश लागू नहीं, और जब धरती पर वह शासन करने वाला राजा नहीं और धरती का कोई भी आराम व सजावट उसकी राजाज्ञा से नहीं तो उसको दण्ड देने का कोई अधिकार नहीं। अत: इतना दयनीय ख़ुदा बनाना और धरती पर रहकर उससे किसी कार्यवाही की आशा रखना मूर्खता है। क्योंकि अभी धरती पर उसका राज्य नहीं।

1:: देखो रब्बुल अलमीन का शब्द कैसा संक्षिप्त है अगर साबित हो कि आसमानों के ग्रहों में आबादियां हैं तब भी वह आबादियां अस शब्द के अधीन आऐंगी। इसी में से

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 9 से 11)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

मरियम शादी फण्ड

अहमदी बच्चियों की सम्मान जनक विदाई का प्रबंधन

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की तहरीक

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने अपने अंतिम दिनों में ग़रीब अहमदी बच्चियों की शादी में बिना दहेज के जाने के बाद आने वाली समस्याओं और उनके ससुराल के तानों पर बहुत दु:ख किया और अहमदी बच्चियों की शादी के मौके पर सहायता की व्यवस्था कहते हुए इस मुबारक तहरीक की घोषणा की। इस दु:ख को हुज़ूर ने इन शब्दों में उल्लेख किया :.

"मैं यह घोषणा करना चाहता हूँ कि जो भी बेटियां ब्याहने वाले हैं और गरीबी की वजह से उन्हें कुछ दे नहीं सकते, कुछ थोड़े बहुत कपड़े, कुछ सिंगार की चीज़ें यह तो अनिवार्य हैं वरना वह अपने ससुराल में जाकर शर्मिंदा होती हैं। मुझे कई बच्चियों ने बेचारियों ने यह ख़त लिख कर अपने दर्द को व्यक्त किया है कि हमारे पास कुछ ज्यादा चीज़ें नहीं थीं। साधारण कपड़े थे नतीजा यह निकला कि ससुराल पहुंचे तो ताने मिलने शुरू हो गए और कई ताने मलते हैं। यह तो अत्याचार करते हैं जो ताने देते हैं क्योंकि आँ हज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत तो यह थी कि दो कपड़ों में अपनी बेटी को विदा किया है और कोई दहेज आदि नहीं था। मगर अब रिवाज पड़ गया है। इस लिए देखा देखी कुछ ज़रूर करना पड़ता है। इसके लिए मैं यह घोषणा करता हूं कि जिनकी बेटियां ब्याहने वाली हैं और उन्हें मदद की ज़रूरत है। यथा ताकत मैं अपनी तरफ से भी कुछ उन्हें प्रदान करता हूं। वह स्पष्ट रूप से मुझे लिखें कि उनका उचित गुज़ारा हो जाएगा और दहेज की रस्म कुछ हद तक पूरी हो जाएगी अगर मेरे अंदर इतनी ताकत न हो तो अल्लाह के फज़ल से ख़ुदा तआला की जमाअत ग़रीब नहीं है। बहुत रुपया है जमाअत के पास तो इंशा अल्लाह जमाअत के एक फण्ड से उनकी सहायता कर दी जाए मगर उन को तौफीक मिल जाएगी कि उनकी बेटियों अच्छाई और भलाई के साथ अपने घरों को रवाना हों। अल्लाह तआला मुझे इसकी ताकत प्रदान करे और जिस हद तक मुझ में ताकत है इंशा अल्लाह ज़रूर उनकी मदद करूंगा और अल्लाह तआला उन्हें आसानी से विदा करे।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 21 फरवरी 2003 फज़ल इंटरनेशनल 28 मार्च 2003)

हज़रत ख़लीफतुस मसीह अलखामिस अय्यदुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने शादी ब्याह के अवसर पर फज़ूल खर्ची से बचने की हिदायत की और इन अवसरों पर ग़रीब बच्चियों की शादी के लिए रकम उपलब्ध कराने की हिदायत करते हुए फरमाया।

"जो लोग बाहर के देशों में हैं अपने बच्चों की शादियों में अनगिनत खर्च करते हैं अगर साथ ही पाकिस्तान, भारत और अन्य ग़रीब देशों में ग़रीब बच्चियों की शादी के लिए कोई राशि विशिष्ट कर दिया करें तो जहाँ वे एक घर की खुशियों के सामान कर रहे होंगे वहाँ यह एक जारी रहने वाला सदका होगा जो अपनी बच्चों की ख़ुशियों की भी गारंटी होगा। अल्लाह तआला नेकियों को बर्बाद नहीं करता तो कुछ सामर्थवान लोगों में बहुत अधिक दिखावा और खर्च करने का शौक होता है शादियों पर बेशुमार खर्च कर रहे हैं कई-कई प्रकार के भोजन पक रहे होते हैं जो अक्सर नष्ट हो जाते हैं। यहां से जब विशेष रूप से पाकिस्तान में जाकर विवाह करते हैं तो सादगी से शादी करें और बचत से किसी गरीब की शादी के लिए पैसे दें तो अल्लाह की रज़ा हासिल कर रहे होंगे।

हुज़ूर अनवर और फरमाते हैं।

"अमारों को पहले भी कह चुका हूँ अब भी कहता हूँ फिर से तहरीक कर देता हूँ कि मरियम शादी फंड में ज़रूर शामिल हुआ करें और विशेष रूप से जो धनवान हैं और जब अपने बच्चों की शादियां होती हैं तब अवश्य ध्यान में रखा करें कि किसी न किसी ग़रीब की शादी करवानी है।"

(दैनिक फज़ल 28 फरवरी 2005 ई)

अल्लाह तआला हम सब को अपनी तौफ़ीक़ से बढ़कर इस तहरीक में शामिल होने की शक्ति प्रदान करे। आमीन

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का इनट्रवियू किया। महोदय ने इनट्रवियू की शुरुआत में कहा कि उन्हें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात कर के बहुत ख़ुशी हुई है जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने उनका शुक्रिया अदा किया।

*** इसके बाद महोदय ने कहा कि माल्मो में बनने वाली नई मस्जिद के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?**

इसके जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जब मैं पहली बार माल्मो में आया था तो वहां खेती की भूमि थी, लेकिन जब मैं अब आया हूं तो इस कृषि भूमि पर एक सुन्दर इमारत का निर्माण हो गया है। और मस्जिद वह जगह है जहां हम अपने सच्चे पैदा करने वाले की इबादत करने के लिए जमा होते हैं। अत: यदि आप धर्म के साथ लगाव है तो आप भावनात्मक महसूस करते हैं कि आपके पास एक ऐसा स्थान है जहां आपके समुदाय के लोग एक साथ इकट्ठे होकर ईश्वर की इबादत कर सकें और ख़ुदा तआला की ओर झुक सकते हैं।

*** इस के बाद इस प्रतिनिधि ने सवाल किया कि आपके लिए और जमाअत अहमदिया के लिए माल्मो में मस्जिद बनाना इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जहां भी हमारी जमाअत है, हम वहां अपनी मस्जिद बनाने की कोशिश करते हैं। यह बात नहीं है कि हम ने माल्मो में कोई विशेष उद्देश्यों को लेकर एक मस्जिद बनाई है, बल्कि यहां बहुत अहमदी रहते हैं, और उन्होंने कहा कि हम माल्मो में अपनी मस्जिद बनाना चाहते हैं और उन्होंने एक मस्जिद बनाई है। जर्मनी में आप यह भी देखेंगे कि छोटे शहरों में, छोटे कस्बों में, जिनकी आबादी शायद पच्चीस हज़ार है और वहां अहमदी हैं। वे वहां मस्जिद भी बना रहे हैं। जहां हमारा समुदाय है, इबादत के लिए जगह बनाने के लिए एक प्रयास है। बिल्कुल इसी प्रकार जैसे की अतीत में जहां इसाई होते थे, वहां एक चर्च तैय्यार कर लेते थे।

इस पर प्रतिनिधि ने कहा कि अभी भी तैय्यार करते हैं। जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : कई बार अभी भी करते हैं अधिक वे अफ्रीका में करते हैं। और यूरोप को तो भूल ही चुके हैं।

*** प्रतिनिधि ने पूछा, आपके धर्म और अन्य मुसलमानों के बीच क्या अंतर है?**

उनके जवाब में,ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हमारा कोई नया धर्म नहीं है या हमारा धर्म इस्लाम से अलग नहीं है। हम इस्लाम के पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान रखते हैं और इसी किताब कुरआन करीम पर ईमान रखते हैं जिस पर अन्य मुस्लिम। अंतर यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि आख़री दिनों में, मुसलमान वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं को भुला देंगे और फिर एक व्यक्ति प्रकट होगा और आप ने कुछ निशान भी बताए थे कि जब वह व्यक्ति प्रकट होगा और दावा करेगा, तो तुम इन संकेतों को देख लेना और ये बहुत सारे संकेत हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :अत: हम मानते हैं कि वह व्यक्ति प्रकट हो गया है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो लक्षण वर्णन किए थे उनके अनुसार अंतिम समय में मीडिया बहुत ज्यादा महत्तव वाला बन जाएगा, परिवहन के माध्यमों की बहुतायत होगी और कुछ आकाशीय चिन्ह प्रकट होंगे जैसा कि सूर्य और चंद्रमा को निश्चित काल तथा समय में ग्रहण लगना आदि हैं। अत: हम मानते हैं कि ये निशान पूरे हुए हैं और वह व्यक्ति प्रकट हुआ है। जबकि अन्य मुस्लिम कहते हैं कि जिस मसीह ने प्रकट होना था उस ने आकाश से उतरना था। जबकि हमारी धारणा यह है कि प्रत्येक इंसान इस दुनिया में कुछ समय गुज़ारने के बाद दोबारा नहीं आ सकता और हमारे विश्वास के अनुसार कोई मृत व्यक्ति वापस नहीं आ सकता है। तो जिस व्यक्ति के बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी वह मसीह नासरी नहीं था। बल्कि मसीह के गुणों वाला एक व्यक्ति था। अत: हमारा ईमान है कि वह व्यक्ति आ गया है। आप कह सकते हैं कि हमारे और अन्य मुसलमानों के बीच सबसे बड़ा अंतर यही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस अंतर के बावजूद जिन मुसलमानों को इहसास हो रहा है कि सच्चाई क्या है वे हम में शामिल होते जा रहे हैं। 127 साल पहले, 1889 में जिस आदमी ने मसीह मौऊद होने का दावा किया था और उसके दावे के 127 साल बाद अब उस आदमी की जमाअत लगभग 207 देशों तक जा पहुँची है। जब उनकी वफात हुई उस समय भी अहमदियों की संख्या लगभग चार लाख तक पहुँच गई थी और उस समय संचार माध्यम और मीडिया आज की तरह नहीं था जिस प्रकार के अब हैं। उस समय जो लोग हमारे समुदाय में शामिल लोग ज्यादातर मुसलमान थे। हालांकि मुस्लिम मुल्ला बहुत शोर मचाते हैं और कुछ देशों में हम पर अत्याचार किया जा रहा है और हमारे ख़िलाफ कानून बनाए हैं, लेकिन फिर भी मुसलमानों और अन्य धर्मों के लोग हमारे समुदाय में शामिल हो रहे हैं।

प्रतिनिधि ने कहा कि आप पर पाकिस्तान में प्रतिबंध हैं। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह बिल्कुल सही है कि हम पाकिस्तान में ख़ुद को मुस्लिम नहीं कह सकते हैं। संविधान का कहना है कि अहमदी कानूनी रूप से ग़ैर-मुस्लिम हैं।

*** प्रतिनिधि ने अगला सवाल पूछा कि पाकिस्तान में अहमदियों को ख़तरा क्यों समझा जाता है? या पाकिस्तान को अहमदियों से क्या खतरा है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम तो पाकिस्तान के लिए कोई खतरा नहीं हैं। पाकिस्तान का पहला विदेश मंत्री अहमदी था। बड़ी संख्या में पाकिस्तानी सेनाओं में, अहमदी सैनिकों ने पाकिस्तान के लिए दुश्मनों के साथ लड़ाई कीं और जीवन बलिदान दिया। उन्हें उस समय सरकार द्वारा तमग़ों से सम्मानित किया गया बल्कि अब हाल ही में पिछले महीने एक अहमदी सैनिक जो पाकिस्तानी सरकार के लिए लड़ रहे थे उग्रपंथियों के हाथों शहीद हुए और उनकी तदफीन रबवा में हुई जहां बहुमत अहमदियों की है और सरकार द्वारा उसे पूर्ण सम्मान से दफनाया गया था। तो अगर हम कुछ ग़लत कर रहे हैं तो हम पाकिस्तान के लिए जानें क्यों कुरबान करते हैं और पाकिस्तान की सेवा क्यों करते हैं? पाकिस्तान का पहला नोबेल पुरस्कार विजेता एक अहमदी ही था, जिसे ज़िया-उल-हक ने पाकिस्तानी स्वीकार किया है और दूसरी तरफ ज़िया-उल-हक ही था जिसने अहमदियों के ख़िलाफ अधिक कानून लागू किए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अत: जब कभी उन का कोई लाभ होता है तो हमें कानून का पालन करने वाला और पाकिस्तानी तथा वफादार समझे जाते हैं। इसलिए वे ये सब घटिया राजनीतिक हित के लिए करते हैं, जिसे 1974 ई में पाकिस्तान के प्रधान मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने शुरू किया था, और फिर ज़िया-उल-हक ने इसे मार्शल लॉ के तहत किया था। अत: यह तो राजनीतिक हित के लिए या उन्हें शांत रखने के लिए मुल्ला को ख़ुश रखने के लिए होता रहा है।

*** इसके बाद, प्रतिनिधि ने कहा कि मैंने देखा है कि आप तीसरे विश्व युद्ध के बारे में सूचित करने के लिए दुनिया भर में सफर करते हैं और विभिन्न नेताओं से मिलते हैं और उन्हें पत्र लिखते हैं। मुझे इसके बारे में कुछ बताएं।**

इस अवसर पर, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह सही है कि मैं दुनिया भर में यात्रा करता हूं। लेकिन उन यात्राओं का लक्ष्य नेताओं से मिलना नहीं है, बल्कि मैं अपने समुदाय के लोगों से मिलने के लिए यात्रा करता हूं, जिनसे मैं प्यार करता हूं और जो मुझ से प्यार करते हैं। और यात्रा के दौरान, यदि स्थानीय प्रशासन के प्रबंधन राजनेताओं और नेताओं के साथ मुलाकात की व्यवस्था करती है या यदि विभिन्न राजनेताओं से मिलने का मौका मिलता है, तो मैं फिर उन से मिल भी लेता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात दुनिया की शांति है, जिसके बारे में मैं एक समय से बात कर रहा हूं और यही कारण है कि मैं दुनिया के विभिन्न देशों के प्रमुखों को जिस में अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, रूस, सऊदी अरब, ईरान और यहां तक कि पोप को ख़त लिखे हैं ताकि हम सभी परस्पर एकजुट हो व्यावहारिक शांति की स्थापना के लिए प्रयास करें।

*** प्रतिनिधि ने पूछा कि क्या आपके पास कोई समाधान है?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस का समाधान जो मैं हर समय बताता हूं वह यह है कि अपने सच्चे निर्माता को पहचानें और एक-दूसरे का मान सम्मान करें। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने भी यह फरमाया कि मेरे आने के दो लक्ष्य हैं। एक तो मानव जाति को उस के निर्माता के करीब लाना और दूसरा मानव जाति के मानवाधिकारों की तरफ ध्यान दिलाना।

जापान में एक बौद्ध मत के पुजारी ने मुझ से पूछा था कि शांति की परिभाषा क्या है? तो मैंने उन्हें जवाब दिया था कि अपने अधिकारों की मांग करने के बजाय, दूसरों के अधिकारों का अदा करने का प्रयास करें। यदि प्रत्येक इसी तरीका का पालन करता है, तो शांति ही स्थापित अपने आप ही हो जाएगी। दूसरे का हक मारने के बजाय, उस का हक अदा करो। इस तरह, हम शांति स्थापित करने में सक्षम होंगे।

*** प्रश्नकर्ता ने पूछा कि आपको विभिन्न नेताओं को जो ख़त लिखें हैं इस का जवाब क्या मिला है?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुझे सिर्फ कनाडा और यू. के के प्रधानमंत्रियों की तरफ से उत्तर प्राप्त हुआ और उन्होंने लिखा कि हम दुनिया में शांति की स्थापना के लिए प्रयास कर रहे हैं और अपने परमाणु हथियारों में कमी कर रहे हैं। यह सिर्फ एक राजनीतिक जवाब था। मुझे नहीं पता कि वे इस पर कभी कार्य करेंगे।

*** इसके बाद, प्रतिनिधि ने सवाल किया कि स्वीडन और दुनिया भर में आई.एस.आई.एस के बारे में बहुत सी चर्चा होती रही है। बहुत से नौजवान जो यहां यूरोपीय देशों में पले बढ़े हैं यहां से वे आई.एस.आई.एस में शामिल हो रहे हैं। आपके विचार में बहुत से लोग इस में क्यों शामिल हो रहे हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसके लिए कई कारण हैं। एक कारण जो मैं आमतौर पर बताता हूं वह आर्थिक है और अब यह कई राजनीतिक नेताओं और विश्लेषक भी स्वीकार कर रहे हैं। 2008 ई में आर्थिक संकट के कारण, युवा पीढ़ी में काफी वृद्धि हुई है। कई की नौकरियां चली गई थीं। ब्रिटेन में केवल लाखों लोग अपनी नौकरियों से हाथ धो रहे थे। यदि इस संदर्भ में कोई सुधार हुआ है तो इस सुधार का लाभ युवा पीढ़ी को न के बराबर है। जो लोग अनुभवी हैं उन्हें नौकरियां मिलती हैं, जबकि युवा वैसे ही रहते हैं और आई.एस.आई.एस उन्हें पांच, पांच या छह हज़ार डॉलर तक मासिक देकर अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। एक व्यक्ति, जब उसे सौ डालर मासिक मिल रहा हो जब उसे हज़ारों डॉलर मिले तो आप ख़ुद सोच सकते हैं कि तो इस का एक कारण यह है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसके अलावा कई आकर्षक चीजें हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप लड़ते हुए मारे गए हैं, तो आपको जन्नत आदि मिलेगी। लेकिन ये इस्लामी शिक्षा नहीं हैं। ये लोग कुरआन की गलत व्याख्या बताकर अपने प्रभाव में ला रहे हैं। और अपनी बनाई हुई शिक्षाओं पर अनुकरण करवा रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: युवाओं की एक संख्या ऐसी भी है जो ISIS से बचकर निकल आई है और यह युवा बताते हैं कि जब हम वहाँ गए थे तो बहुत अच्छे इरादों के साथ गए थे कि हम इस्लाम के विषय में सीखेंगे और इस्लाम की सेवा करेंगे। लेकिन उन्होंने वहां क्रूरता और अत्याचार के अलावा कुछ भी नहीं देखा। इसलिए यदि ये युवा कट्टरपंथी हैं, तो सरकारों को ठोस कदम उठाने चाहिए और देखें कि वे कट्टरपंथी क्यों बन रहे हैं और इसके कारण क्या हैं? अब राजनीतिक विश्लेषकों और कुछ पत्रकार जो वहां गए हैं वे बता रहे हैं कि यदि ये कदम उठाए जाते हैं, तो युवा पीढ़ी को वापस लाया जा सकता है। इसलिए जैसा कि मैंने कहा था कि आई.एस.आई.एस जो कर रही है वे इस्लामी शिक्षाओं के ख़िलाफ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह भी कहा जा रहा है कि युवाओं में जिन्होंने सबसे अत्याचार किए हैं उनका संबंध अफ्रीका, एशिया या दुनिया के किसी और हिस्से से आए हुए निवासियों से नहीं बल्कि स्थानीय यूरोप के निवासियों से था। तो हमें देखना है कि यह क्यों हो रहा है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दूसरी ओर आप यह भी देखेंगे कि अहमदी युवा इन चरमपंथियों के हाथों radicalise नहीं हो रहे। क्योंकि हमारी शिक्षा असली इस्लामी शिक्षाएं हैं। हम उन्हें बचपन से बताते हैं कि असली इस्लाम क्या है।

*** प्रतिनिधि ने कहा कि अब स्वीडन में यह कानून बनाया गया है कि आई.एस.आई.एस में शामिल होना अवैध है। वे लोग जो आई.एस.आई.एस से वापस आना चाहते हैं उन के लिए रास्ता बन्द है। तो क्या ऐसे युवाओं को माफ कर देना चाहिए?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर कोई वहाँ बुरे इरादे के साथ गया था तो उसे कानून का सामना करना होगा और यह कानून और अदालत का काम है कि वह देखे कि वह वहाँ किस इरादे के साथ गया था और क्या उसे अपने सुधार या दंड का मौका मिलना चाहिए। या उसे सज़ा मिलनी चाहिए।

इसके बाद, प्रतिनिधि ने सवाल किया कि स्वीडन में महिलाओं के साथ हाथ मिलाने पर बहस चल रही है और कुछ के निकट यदि आप महिलाओं के साथ हाथ नहीं मिलाते हैं, तो इसका मतलब है कि आप उनका सम्मान नहीं करते हैं। इस संदर्भ से आपकी राय क्या है?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अगर मैं किसी महिला के साथ हाथ नहीं मिलता तो आप को क्या पता कि मेरे दिल में क्या है? अगर मैं महिला के साथ हाथ नहीं मिलाता तो मैं अपनी धार्मिक शिक्षाओं और परंपराओं के कारण ऐसा नहीं करता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह एक बहुत छोटी चीज़ है जिसे एक बड़ी समस्या बना दिया गया है। मुझे समझ में नहीं आता कि एक आदमी जो एक महिला के साथ हाथ नहीं मिलता है तो क्या इस से देश के विकास में बाधा आ जाती है? या यह प्रक्रिया घरेलू विकास के लिए बेहतर साबित होती है? इन मामलों का सम्बन्ध तो आप के अपने व्यक्तित्व से है आप के हैं। क्यों राजनेता और राजनीतिक लोग इन बातों में उलझ रहे हैं? हज़ारों मामले इस से अधिक गंभीर हैं। हज़ारों लोग भूखे हैं, और यहां स्वीडन में भी बहुत से लोग हैं जो गरीबी रेखा से नीचे हैं। आप भूखे लोगों को खिलाने के बारे में चिंता क्यों नहीं करते ? आप ऐसे लोगों के लिए नौकरियां क्यों नहीं देते? महिलाओं के साथ हाथ मिलाना एक बड़ी समस्या नहीं है, असली मुद्दे तो ये हैं। इस के बारे में बहस क्यों नहीं हो रही? लोग तब dustbins से भोजन की तलाश क्यों कर रहे हैं?

*** प्रतिनिधि ने पूछा कि आप महिला से हाथ मिलाएंगे या नहीं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं महिलाओं से हाथ नहीं मिलाता क्योंकि मैं एक धार्मिक नेता हूँ और मैं अपनी धार्मिक शिक्षाओं और परंपराओं का पालन करता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : दुनिया में कई जनजातियां और धर्म हैं जिनके अपने तौर-तरीके हैं और वे हाथ नहीं मिलाते। हिंदुओं का अपना रास्ता है कि वे हाथ जोड़ कर नमस्ते करते हैं। जापानियों का अपना रास्ता है और वे बस झुकते हैं। अफ्रीका में कुछ प्रमुख हैं जो हाथ नहीं मिलाते और दूसरों की उपस्थिति में भोजन नहीं खाते हैं। तो हम यह नहीं कह सकते कि वे ग़लत हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि मैं राष्ट्रीय कानूनों पर अनुकरण करने वाला हूं। अगर मैं अपने देश से प्यार करता हूं। अगर मैं देश के विकास के लिए भरपूर कोशिशें कर रहा हूं और इस के लिए अपनी सभी प्रतिभाओं और क्षमताओं के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूं, तो मुझे इस प्रकार का व्यक्ति नहीं समझा जाएगा जो इस समाज का हिस्सा नहीं है। देश के प्रति वफादारी दिखाने के लिए महिलाओं के साथ हाथ मिलाना या शराब पीना ज़रूरी नहीं है। ऐसे कई इसाई हैं जो शराब नहीं पीते हैं या शराब खानों में नहीं जाते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे समाज का हिस्सा नहीं हैं। यहूदियों में पुरुषों के साथ महिलाओं को हाथ मिलाने की मनाही है। यह एक अलग बात है कि वे इस का पालन नहीं करते हैं। यदि यह हरकत कोई यहूदी करता, तो आप इस को इतनी बड़ी समस्या नहीं बनाते और इसके ख़िलाफ बोलने वाले को anti-semitism का नाम देंगे। लेकिन चूंकि यह किसी मुसलमान ने किया है, इस कारण से सब परेशान हो गए।

*** प्रतिनिधि ने कहा कि कट्टरपंथी इस्लाम और महिलाओं के साथ हाथ मिलाने ऐस प्रकार के प्रश्नों से थक गए होंगे।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया , इस्लाम को कट्टरपंथ या इस्लाम को कट्टरपंथी कहने यह एक बड़ी समस्या है। इस से दुनिया की शांति ख़राब हो रही है। यदि स्वीडिश मुस्लिम कट्टरपंथी है, तो यह स्वीडन के लिए परेशानी नहीं है बल्कि यह दुनिया के किसी भी देश के लिए खतरा है। जैसा कि यहां एक स्वीडिश ब्रुसेल्स में गया है। तो यदि माल्मो में कोई व्यक्ति कट्टरपंथी बनाता है, तो वह केवल माल्मो के लिए नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए भी है। यदि कोई दक्षिण अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका में कट्टरपंथी होता है, तो यह दुनिया के हर देश के लिए एक खतरा है। अगर कोई ईरान, जॉर्डन, सीरिया या मिस्र में कट्टरपंथी है, तो यह पूरी दुनिया के लिए एक खतरा है। तो यह एक बड़ी समस्या है और इसे एक विभिन्न तरीके से हल करने की ज़रूरत है। इसलिए, इस

का हाथ मिलाने वाले मसला से मुकाबला नहीं कर सकते। राजनेताओं ने इस मसला को केवल और केवल सिर्फ ध्यान आकर्षित करने के लिए केवल इस मुद्दे को उठाया है।

उसके बाद, प्रतिनिधि ने सवाल किया कि समलैंगिक के प्रति आप का दृष्टिकोण क्या है? यदि कोई समलैंगिक है, तो क्या यह मस्जिद में आ सकता है?

इस पर, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "कुरआन की तुलना में बाईबल में homosexuality पर अधिक विस्तृत वर्णन किया गया है। यदि आप वास्तव में ईसाई धर्म का पालन करते हैं, तो आप इस कार्रवाई को नापसंद करेंगे। आप ने लूत की कौम का नतीजा भी देखा होगा जिन्हें दंडित और नष्ट कर दिया गया। इसका वर्णन बाइबल में भी वर्णित है। यदि आप ईश्वर में विश्वास करते हैं और मानते हैं कि बाइबल में जो भी लिखा गया है, वह सच है, बाइबल कहती है कि वे अपने बुरे कर्मों के परिणामस्वरूप तबाह हो गए थे। फिर इस ज़माने के लोगों को सज़ा क्यों नहीं मिलेगी? दूसरी बात यह है कि अगर कोई समलैंगिक है तो आवश्यक है कि वह घोषणा करे कि मैं homosexual हूँ? अगर कोई घोषणा भी कर के कहे कि वह समलैंगिक है तो हम इसे मस्जिद में आने से नहीं मना करेंगे। लेकिन इसके साथ सहानुभूति करते हुए हम उसे यह ज़रूर बताएंगे कि उसे अपने अंदर बदलाव पैदा करना चाहिए और वरना कुरआन और बाइबिल की शिक्षाओं के अनुसार उसे ख़ुदा तआला की तरफ से अज़ाब की सज़ा मिलेगी। अब, मनोचिकित्सा भी इसे स्वीकार कर रहे हैं और कहते हैं कि यह एक मनोवैज्ञानिक बीमारी है जिस का इलाज मौजूद है। लेकिन समलैंगिकता के बारे में बनाए जाने वाले कानूनों के कारण वे चुप हैं। देखें कि जब यह नियम नहीं बने थे तब भी homosexual मौजूद थे मगर ऐसे लोग केवल वही थे जिन्हें बचपन में कोई मनोवैज्ञानिक समस्या थी जिसकी वजह से वह ऐसे बन गए लेकिन विभिन्न विधानसभाओं में कानून पास होने के बाद ऐसे लोग भी जिन्हें बचपन में कोई मनोवैज्ञानिक समस्या नहीं थीं, अब वे भी इन समलैंगिकों के प्रभाव में आ रहे हैं। और केवल और केवल कामवासना के कारण इस तरफ आ रहे हैं। यदि आप समलैंगिकों के डेटा देखें तो आप पाएंगे कि लोगों को चालीस या पचास साल के बाद यह समस्याएं शुरू हो जाती हैं और वे इस समय अपने साथी को छोड़ना चाहते हैं। कुछ लोग जो बड़ी आयु में समलैंगिक क्लबों में शामिल होते हैं, उन में से कुछ शादी शुदा है और उन की पत्नियां भी परेशान हैं और कहती हैं कि इन लोगों ने हमारे विवाहित जीवन को बर्बाद कर दिया है। ऐसे लोगों ने पहले कभी समलैंगिकों की तरफ जाने का सोचा भी नहीं होता लेकिन अब केवल और केवल अपनी कामवासना के लिए समलैंगिक क्लबों में जाने लगे हैं।

प्रतिनिधि ने कहा यह तो केवल उन लोगों के लिए जो धर्म में विश्वास करते हैं। लेकिन कई लोग तो धर्म में विश्वास नहीं करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं कुछ समलैंगिकों को जानता हूं जो मुस्लिम हैं। जब मैंने उन्हें कहा कि अपना इलाज करवाएं तो वे इलाज से ठीक हो गए। उन्होंने अपने समलैंगिक साथी से अपनी नफ्सानी इच्छाओं को पूरा करना छोड़ दिया और फिर महिला से विवाह किया और अब वह महिला के साथ संबंध स्थापित करके प्रसन्न है।

*** प्रतिनिधि ने कहा,फिर आप का ऐसे लोगों के बारे में क्या विचार हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं ऐसे लोगों से सहानुभूति व्यक्त करता हूं।" जब मुझे पता है कि ख़ुदा तआला उन लोगों को दंडित करेगा तो मैं सहानुभूति के कारण उन्हें समझाने की कोशिश करता हूं और मैं ऐसे लोगों से नफरत नहीं करता। अगर उनमें से कोई भी हमारी मस्जिद में दुआ करना चाहता है, तो वह आ सकता है। मैं उन्हें मस्जिद आने से नहीं रोकूंगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि आप समलैंगिक नहीं हैं और विपरीत लिंग से संबंध स्थापित करते हैं तो क्या आप सड़कों पर ये रिश्ते स्थापित करते हैं? या घोषणा करते हैं कि मुझे यह संबंध स्थापित करना है। यदि आप घोषणा नहीं करते हैं, तो समलैंगिकों के बारे में इतना कुछ करने की क्या ज़रूरत है? कोई भी यह नहीं कहता कि मुझे अपनी पत्नी या मित्र और साथी के साथ लैंगिक सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार है। और मैं घोषणा करता हूं। इस का किसी समाचार पत्र में खबर नहीं छपती या घोषणा नहीं होती।

*** उसके बाद, प्रतिनिधि ने कहा कि क्या आपको लगता है कि जमाअत अहमिदया के लिए आवश्यक है कि वह आधुनिक समाज के अनुसार अपने आप को ढाले?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरा विश्वास है कि धर्म अपनी शिक्षाओं का पालन करने के लिए आता है न कि दूसरों के विचारों और परंपराओं पर पालन होने के लिए। सभी नबी उसी समय आए जब आध्यात्मिकता का पतन हो गया। और यह अब यही अवस्था है। आज लोग दुनिया की ओर सीमा से बहुत अधिक इच्छुक हो गए हैं। आध्यात्मिकता और धर्म अंधेरे का शिकार हो चुके हैं। कोई भी इसके बारे में सोचता नहीं है। यह केवल अहमदिया जमाअत है जो कहती है कि हमें सारी मानव जाति को अपने निर्माता के निकट करना है ताकि अल्लाह के अधिकारों को और बन्दों के अधिकारों को अदा किया जा सके। अत: मैं तो प्रत्येक के साथ सहानुभूति रखता हूं। मैं किसी से नफरत नहीं करता हूं। अगर मैं कुछ नापसंद करता हूं, तो यह किसी आदमी की कोई क्रिया है, न कि व्यक्ति। अगर कोई चोर या हत्यारा है, तो मैं उसके कार्यों से बहुत नफरत करता हूं लेकिन इस व्यक्ति को नापसंद नहीं करता। मैं इस प्रकार के आदमी के लिए दुआ करता हूं कि वह अपना सुधार करे और अपने बुरे कामों से तौब: करे। यही मेरा धर्म है और हमें इस धर्म को फैलाना है। और कुरआन का कहना है कि धर्म के मामले में कोई बलात नहीं है। अगर आप इस को स्वीकार करते हो तो बहुत अच्छी बात है। यदि नहीं स्वीकार करते तो आप की इच्छा। आप स्वतंत्र हैं तो परन्तु इस के साथ साथ हम सभी इंसान भी हैं। हम किसी बात को स्वीकार करते हैं या उस का इनकार करते हैं लेकिन मानव के रूप में हम सभी को एक दोस्ताना वातावरण में एक साथ मिलजुल कर रहना चाहिए। और समाज के विकास के लिए काम करना चाहिए।

इस के बाद समाचार पत्र के प्रतिनिधि ने कहा, आपको समाचार पत्रों में आप को मुस्लिम पोप भी कहा जाता है। इस के बारे में क्या कहेंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि आप मुझे मुस्लिम पोप कहना चाहते हैं तो यह आप की इच्छा है। अगर मैं अपने शब्द प्रयोग करूं तो मैं कैथोलिक पोप को एक ईसाई ख़लीफा के रूप में बुलाऊंगा (यह केवल शब्द मात्र है।)। इस अखबार के प्रतिनिधि ने आख़री सवाल पूछा कि क्या आप कैथोलिक पोप से मिल चुके हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरी पोप से कभी मुलाकात नहीं हुई है लेकिन मुझे पोप की कुछ बातें तथा मूल्य पसंद हैं।

इस इनट्रवियू के अंत में अख़बार के प्रतिनिधि ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का धन्यवाद किया। ।

स्वीडिश राष्ट्रीय रेडियो के प्रतिनिधि का हुज़ूर अनवर के साथ इनट्रवियू

इस के बाद स्वीडिश राष्ट्रीय रेडियो की प्रतिनिधि अन्ना बुबेहो (Anns Bubehko) ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का इनट्रवियू लिया।

*** महोदया ने कहा कि मेरा तरीका यह है कि जब भी मैं किसी का इनट्रवियू लेती हूं तो मैं उस के परिचय के बारे में पूछती हूं। अत: आप भी यह भी बताएं कि आप कौन हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं ख़ुदा तआला का विनम्र व्यक्ति हूं। मेरा 2003 ई में अहमदिया जमाअत के प्रमुख के रूप में चयन हुआ जिसे हम ख़लीफा के नाम से बुलाते हैं। अत: तब से मैं इस जमाअत का नेतृत्व कर रहा हूं।

महोदया ने पूछा, ख़लीफा होने का क्या मतलब है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। यह राजनीतिक या वैश्विक नेता की तरह नहीं है। अपने अनुयायियों का ख्याल रखना उन्हें इस्लाम, कुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मूल शिक्षाओं के विषय में बताना मेरी जिम्मेदारी है और इस उद्देश्य का पालन करना जिसे लेकर संस्थापक जमाअत अहमदिया आए थे। और उनका उद्देश्य यह था कि मानव जाति को अपने निर्माता के क़रीब किया जाए और मानव जाति को इंसानों के अधिकारों को अदा करने का इहसास दिलाया जाए।

*** महोदया ने पूछा कि दुनिया में लाखों की संख्या में अहमदी मुसलमान हैं। आप साल के दौरान कितने सफर करते हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ तआला ने फरमाया: यद्यपि मैं यात्रा तो करता हूँ लेकिन मैं यही नहीं कहूंगा कि मैं अहमदियों की बहुत बड़ी संख्या के साथ मिल चुका हूँ। मैंने पूर्व और पश्चिम अफ्रीका, भारत, उत्तरी

अमेरिका, यूरोप, जापान, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के दूर दराज़ देशों के दौरे किए हैं मैं जमाअत के लोगों के साथ मिला हूं। पिछले 13 वर्षों के दौरान, मैंने इन देशों के दौरे किए हैं। आप कह सकती हैं कि मैं साल में दो या तीन महीने से अधिक बाहर व्यतीत करता हूं।

*** महोदया ने पूछा कि क्या कोई ऐसा देश है जहां आप नहीं गए हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ऐसे कई देश हैं जहां मैं पहले कभी नहीं गया। इंडोनेशिया में हमारी बहुत बड़ी जमाअत है, मैं वहां कभी नहीं गया। मलेशिया में हमारी जमाअत है। इसी तरह दक्षिण अमेरिका में हमारा समुदाय बढ़ रहा है और मैं वहां भी कभी नहीं गया हूं। पश्चिमी अफ्रीका के कुछ देशों में नहीं गया हूं। सिएरा लियोन, लाइबेरिया और आइवरी कोस्ट नहीं गया हूं। मध्य पूर्व के देशों में हमारी जमाअत स्थापित है मगर वहां नहीं जा सकता हूं। पाकिस्तान में हमारी बहुत बड़ी जमाअत है जहां मैं ख़लीफा बनने से पहले रहता था और मैं ख़लीफा बनने के बाद वहां नहीं जा सका। क्योंकि वहां ऐसे कानून हैं जिन के कारण हम स्वतन्त्र रूप से अपना प्रचार नहीं कर सकते।

उसके बाद महोदया ने कहा कि इस समय अहमदी मुस्लिमों के लिए सबसे बड़ा सवाल क्या है और आपका ध्यान किस तरफ है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जैसा कि मैंने पहले बताया कि मेरी जिम्मेदारी मानव जाति को उसके निर्माता के निकट करना है और यह कोई मामूली काम नहीं है। आज के युग में, लोगों को धर्म की बजाय दुनिया की ओर अधिक ध्यान रखते हैं और फिर यह भी कर्तव्य है कि लोग एक दूसरे के अधिकार अदा करें। क्योंकि जब एक दूसरे के अधिकार अदा नहीं करते आप शांति स्थापित नहीं कर सकते हैं। यदि हर कोई उनके ऊपर लागू अधिकारों को अदा कर रहा हो तो फिर लड़ाई झगड़े की कोई अवस्था नहीं बचती।

*** महोदया ने इस पर कहा कि यह पहलू तो काफी व्यापक है। क्या आप एक ठोस बात का उदाहरण दे सकते हैं जिस पर आप काम कर रहे हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हमारा यही एक मिशन है और इसी मिशन के अधीन दुनिया भर में काम किया जा रहा है। एक तो मिशनरी कार्य है जिसे हम वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं के लिए तब्लीग़ करते हैं जो कुरआन करीम में वर्णन हुई हैं और इस्लाम के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श में देखने को मिलती हैं। और दूसरी बात मानवता की सेवा करना है। जो हम तीसरी दुनिया के देशों में ला रहे हैं। उदाहरण के लिए, हम स्कूल, अस्पताल और अन्य सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। तीसरी दुनिया के कुछ देशों, खासकर के अफ्रीका में, कुछ जगहें हैं जहां पेयजल उपलब्ध नहीं है। फिर हमने कई और मानव सेवाओं की परियोजनाएं शुरू की हैं। जिसमें मॉडल गांव आदि शामिल हैं इस तरह के कई अन्य कार्य हैं। मुझे नहीं पता कि आप क्या पूछना चाहती हैं।

*** इस महिला के पत्रकार ने कहा कि मेरा मतलब था कि इस समय आप अधिक ध्यान किस काम पर दे रहे हैं।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : तब्लीग़ का काम है इस्लामी शिक्षा को फैलाने का काम है और फिर मानव सेवा का एक काम है। यह दो कार्य हमारे ध्यान का केंद्र हैं।

उसके बाद, महोदया ने पूछा कि मार्च में ग्लासगो में एक अहमदी मुसलमान को कत्ल कर दिया गया था। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इस घटना ने यू.के में जमाअत अहमदिया पर क्या प्रभाव किया।?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : आप जानती हैं कि यूरोपीय संघ और ब्रिटेन में धार्मिक आज़ादी है। एक कत्ल की घटना हुई थी और पुलिस ने उस व्यक्ति को पकड़ा जिसने कत्ल किया था और वह इस समय जेल में है और उसे उस की सज़ा मिल जाएगी। वहां की सरकार और हुकूमत हमें सुरक्षा दे रहे हैं। यहां तक कि कुछ मुस्लिम जमाअतों ने भी हमारे बारे में अपनी नेक भावनाएं व्यक्त की हैं। अब मुझे नहीं पता कि उन्होंने हुकूमत या मीडिया के दबाव में आकर किया है या लोगों का दबाव था। लेकिन बहरहाल यह जमाअत अहमदिया के लिए हानि थी और उसके द्वारा यू.के में कोई अच्छा उदाहरण स्थापित नहीं हुआ।

*** महोदया ने कहा, क्या हत्या की इस घटना के बाद आपकी मस्जिदों की सुरक्षा में वृद्धि हुई?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बिल्कुल वृद्धि हुई है, यहां तक कि कुछ क्षेत्रों में जहां मुसलमानों की बड़ी संख्या है वहाँ पुलिस ने ख़ुद हमें अपनी सुरक्षा बढ़ाने के लिए कहा है।

*** महोदया ने पूछा, आपको क्या लगता है कि आपको भविष्य में अपनी सुरक्षा में वृद्धि करनी होगी?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप को पता है कि दुनिया के हालात कैसे तेज़ी से बदल रहे हैं? और यह केवल अहमदियों की सुरक्षा की बात नहीं बल्कि प्रत्येक की सुरक्षा का प्रश्न है। radicalised लोगों का सिलसिला इसी तरह कुछ समय चला तो आप ख़ुद भी सुरक्षित नहीं होंगी। अभी तक यूरोप में अहमदियों के सार्वजनिक स्थानों या इज्तिमाओं पर हमला नहीं हुआ लेकिन पेरिस और ब्रेसेल्स में आम जगहों पर भी जिस तरह हमलावरों ने अत्याचार पूर्ण कार्य किया है वह आप ने देख ही लिया।

उसके बाद महोदया ने सवाल किया कि मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिकता में वृद्धि हुई है और उस में सुन्नी और शिया के बीच का संघर्ष भी है। इस से आपकी जमाअत को क्या प्रभाव पड़ता है? आप इस के बारे में क्या कहेंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : उग्रपन्थी मुसलमान तो प्रत्येक को निशाना बना रहे हैं। वे मुझे भी और आप को भी निशाना बना सकते हैं। जहां तक अहमदियों का संबंध है तो हमें दोहरे जोखिम हैं क्योंकि वे हमारे विश्वासों के मतभेदों के कारण हमारे ख़िलाफ हैं। सुन्नी कुछ स्थानों पर शिया लोगों को मार रहे हैं और कुछ स्थानों पर आत्मघाती हमले कर रहे हैं, और जहां भी शिया को मौका मिलता है, वे वही करते हैं। लेकिन हम शान्ति प्रिय लोग हैं जब हमारी दो मस्जिदों में सौ से अधिक लोगों को मार दिया गया था, तब भी हमने किसी प्रकार का बदला लेने की कोई कार्रवाई नहीं की। हम शांति के साथ रहते हैं, यहां तक कि सरकार ने कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया जो इन हमलों में लिप्त थे लेकिन उनमें से कुछ को तो सज़ा दी गई और कुछ को ज़मानत पर रिहा कर दिया गया और कुछ को सभी प्रकार के आरोप से बरी घोषित किया गया था। इस समय भी हम ने न तो कुछ किया है और न ही कर सकते हैं क्योंकि देश का कानून हमारे विरुद्ध है। अत: यही हमारा तरीका है और हम इस तरह सब कुछ सहन करते हैं।

*** महोदया ने कहा कि आपने धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में बात की है, जिस से मैं समझती हूं कि आप जहां भी रहते हैं, अल्पसंख्यक के रूप में रहते हैं।**

* इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मुस्लिम दुनिया में एक अल्पसंख्यक की स्थिति रहते हैं, लेकिन यहाँ यूरोप में तो कुछ विशेष नस्लों या मज़हबों से संबंधित लोग रहते हैं जिन की गिनती यहां अल्पसंख्यकों में होती है लेकिन आप लोग तो हमें मुसलमान ही समझते हैं जिस प्रकार सुन्नी शिया को मुसलमान समझते हैं। इसलिए यूरोप में हम मुस्लिम अल्पसंख्यक हैं न कि केवल अहमदी अल्पसंख्यक हैं।

*** महोदया ने कहा कि अल्पसंख्यक के रूप में, हमेशा यह प्रश्न होता है कि आप को अपने आस पास के अधिकांश हिस्सों में रहने वालों के रस्म तथा रिवाज के अनुसार अपने आप को ढालना होगा।**? हाल ही में एक मुसलमान राजनीतिज्ञ के महिलाओं के साथ हाथ मिलाना न मिलाने पर होने वाली चर्चा का आप को ज्ञान होगा। मेरा प्रश्न यह है कि आप को अपने परिवेश में रहने वाले समुदाय की आशाएं जैसे महिला से हाथ मिलाना आदि आप की धार्मिक स्वतंत्रता को कब और कैसे रद्द करती हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हम यहां और यूरोप में जहां कहीं भी हैं समाज का भरपूर हिस्सा होते हैं। यदि आप यहां भी ईसाई पड़ोसियों से पूछें क्योंकि यह एक ऐसा गांव है जहां जनसंख्या अधिक नहीं है लेकिन अन्य कस्बों और शहरों में, अहमदी हर जगह समाज का भरपूर हिस्सा हैं। एक पत्रकार होने के रूप में, आप यह बताएं कि आप के निकट एकीकरण की परिभाषा क्या है? आपके निकट एकीकरण की परिभाषा कुछ और है तथा मेरे निकट कुछ और है मेरे विचार में अगर में देश के कानून का पालन करता हूं देश के साथ वफादार हूँ, देश के नागरिकों के अधिकार अदा करता हूँ और इस देश के विकास के लिए भरपूर कोशिश करता हूँ तो मेरे निकट इस देश में integrated हूँ और इस देश का हिस्सा हूँ। और यही बात मैंने अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन से सीखी है कि देश से मुहब्बत आपके ईमान का हिस्सा है। हाथ मिलाना तो कोई समस्या नहीं है। यह एक सांस्कृतिक, पारंपरिक और कई बार एक धार्मिक चीज़ है। यदि मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं और मेरा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि महिला की इज्ज़त के लिए उसके साथ हाथ नहीं मिलाना, मेरा धर्म कहता है कि महिला के साथ हाथ नहीं मिलाना और उसका अत्यधिक सम्मान करो तो यह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 6 September 2018 Issue No. 36

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

कोई समस्या नहीं है। लेकिन इसे झूठी प्रतिष्ठा के लिए एक समस्या बनाया जा रहा है और इसे अन्य समस्याओं से अधिक उछाला जा रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मुझे लगता है कि यह इस देश की परंपरा है। अगर मैं आप से हाथ नहीं मिलता है, तो इस से समाज को नुकसान नहीं पहुंचाता है। इस से आपकी भावनाएं आहत नहीं होती हैं। अगर मेरा धर्म कहता है कि महिला के सम्मान के लिए उस से हाथ न मिलाओ तो इस शिक्षा के पीछे भी कोई ज्ञान की बात है जो अल्लाह तआला सर्वश्रेष्ठ जानता है। लेकिन मुझे पता है कि मेरी अपनी परंपराएं हैं, मेरे पास अपनी ख़ुद की शिक्षाएं हैं जिन पर मैं अभ्यास करता हूं और दूसरों को मेरी परंपरा को सहन करने की आवश्यकता होती है और एक दूसरे के साथ एकीकृत करने का यही एक तरीका है। आज की दुनिया में हर देश में विभिन्न धर्मों के अनुयायी है, और हर धर्म के अपने तरीके हैं जिसके साथ हमें समझौता करना पड़ता है। यदि आप धार्मिक स्वतंत्रता का लाभ लेना चाहते हैं, तो नगर के समाज को इस स्वतंत्रता को स्वीकार करना चाहिए। यदि समाज की जरूरतों में वृद्धि होता चली जाए है, तो एक बिंदु इस प्रकार का भी होगा कि आपको धार्मिक स्वतंत्रता नहीं मिलेगी।

*** इस के बाद महोदया ने पूछा कि आपने यह भी कहा है कि तब्लीग़ भी आपके मिशन का हिस्सा है। तो क्या यह स्वीडन में भी आपके मिशन का हिस्सा है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हम स्वीडन में तब्लीग़ कर रहे हैं, और कुछ स्वीडिश लोग भी हमारे समुदाय में शामिल हुए हैं। केवल पाकिस्तानी या एशियाई लोग अहमदी नहीं हैं बल्कि स्वीडन और दुनिया के अन्य देशों में भी हैं, और दुनिया के अन्य देशों में भी स्थानीय लोग अहमदियत में प्रवेश कर रहे हैं।

इसके बाद, महोदया ने सवाल किया कि आप के निकट तब्लीग़ का काम कितना महत्त्वपूर्ण है?

इसके जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हम ने तो यह संदेश फैलाना है। जब नबी आते हैं, तो वे ये मिश्न लेकर आते हैं कि ख़ुदा तआला का संदेश दें। जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, हमारा काम मनुष्यों को उस के निर्माता के निकट लाना है। तब्लीग़ का काम असाधारण महत्त्व का है। जो लोग देखते हैं कि हमारी शिक्षाएं अच्छी हैं वे हमारे साथ शामिल हो जाते हैं। यही कारण है कि हर साल लाखों लोग हमारी जमाअत में शामिल होते हैं। जर्मनी और यूरोप में भी बहुत से लोग हमारी जमाअत में शामिल हो रहे हैं।

*** महोदया ने कहा, कि तब्लीग़ी कार्यों के बारे में कुछ और बता सकते हैं कि यह कितना व्यापक है?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लगभग 207 देशों में हमारे मिशन हैं और जिन देशों में अहमदियों की अधिक संख्या है इन देशों के हर शहर और हर कस्बे में हमारे मिशन स्थापित हैं। हमारी मस्जिदें हैं। हम अपना संदेश फैला रहे हैं और भविष्य में भी फैलाते रहेंगे। (इंशा अल्लाह) इस तब्लीग़ के नतीजा में जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि लाखों की संख्या में लोग हर साल अहमदी जमाअत में शामिल होते हैं। तब्लीग़ के माध्यम से हम इस्लाम और कुरआन की सच्ची शिक्षाओं की तब्लीग़ करते हैं जो एक-दूसरे के अधिकारों को अदा करने के तरफ ध्यान केंद्रित करती है, एक दूसरे का सम्मान करने की तरफ ध्यान देती है। कुरआन में महिलाओं के अधिकारों की गारंटी दी गई है, महिलाओं को विरासत का अधिकार दिया गया है, महिला को ख़ुलअ का अधिकार दिया गया है। यूरोप में कुछ दशकों पहले ये अधिकार दिए गए थे। अत: ये वे शिक्षाएं और कुरआन के आदेश हैं जिन पर एक सच्चा मुस्लिम अनुकरण करता है। जब लोगों को इस्लामी शिक्षाओं की सच्चाई का पता चलता है तो वे हमारे साथ आकर शामिल हो जाते हैं। हमारा लक्ष्य इस संदेश को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लेकर जाना है और यही काम हम कर रहे हैं।

इसके बाद, महोदया ने पूछा कि आपका ख़ुत्बा जुम्अः लाइव रहेगा। इस ख़ुत्बा में आप क्या संदेश देंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरा ख़ुत्बा मस्जिद के संदर्भ में होगा। आमतौर जब किसी मस्जिद का उद्घाटन करता हूँ तो मस्जिद के महत्त्व का विषय लेता हूँ और बताता हूँ कि यह मस्जिद कैसे बनी और जमाअत ने इस मस्जिद बनाने के लिए कैसे कुरबानी कीं। हमारी शिक्षाएं क्या हैं और हम सभी को एक साथ कैसे इकट्ठा होकर अपने निर्माता के सामने झुकना चाहिए। तो मेरा ख़ुत्बा का विषय मस्जिद ही होगा।

*** महोदया ने कहा कि मुझे पता चला है कि आप यहां कई परिवारों का इन्टि्वयू करेंगे। यह कितना महत्त्वपूर्ण है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इन्ट्रवियू तो नहीं फैमलियों के साथ मुलाकातें होती हैं अहमदियों के दिल में ख़िलाफत के लिए बहुत मुहब्बत होती है और ख़िलाफत को भी जमाअत के लोगों के साथ प्यार होता है जिस तरह आप को अपने बच्चों के साथ प्यार होता है ।

पारिवारिक मुलाकात

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाकात शुरू हुई। सुबह के इस सत्र में, 15 परिवारों के 46 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए। और छोटी आयु के बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए। इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य पाया। मुलाकात करने वाले इन परिवारों में से, आठ परिवारों के सदस्य स्वीडन की जमाअत लोलियू के हैं, और ये परिवार 1510 किलोमीटर की लंबी दूरी तय कर के अपने प्यारे आक़ा के मुलाकात के लिए पहुंची थीं। उनमें से कुछ परिवार एसे भी थे जो अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल से मुलाकात कर रहे थे। आज का दिन उन के जीवन में बहुत अधिक यादगार और मोहक दिन था जब उन्होंने पहली बार अपने प्यारे आक़ा को कुछ क्षण के लिए देखा और अपने आक़ा से बातें कीं।

लोलियू जमाअत स्वीडन के सबसे उत्तरी क्षेत्रों में से एक है। यहां जमाअत की स्थापना दिसंबर 2007 ई में हुई थी और अब अप्रैल में जमाअत ने एक इमारत सेन्टर के रूप में प्राप्त किया है। यह वह क्षेत्र है जहां गर्मियों में रात केवल आधा घंटा होती है यानी साढ़े तेईस घंटे का दिन होता है और सर्दियों में रात साढ़े बाईस घंटे की होती है और केवल डेढ़ घंटे का दिन होता है। जहां जमाअत की संख्या 52 है।

मुलाकात का यह प्रोग्राम 1 बज कर 45 मिनट तक जारी रहीं। इस के बाद दोपहर दो बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद महमूद में पधार कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

पहले पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ कार्यालय के मामलों को करने में व्यस्त थे। कार्यक्रम के अनुसार सुबह सात बजे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पदारे और परिवार के सदस्यों से मिलना शुरू कर दिया। आज शाम इस सत्र में 16 परिवारों के 61-व्यक्तियों और 9 दोस्तों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ से मुलाकात का अवसर पाया। इस तरह कुल 70 लोगों ने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए। और छोटी आयु के बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए। इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य पाया।

मुलाकातों का यह प्रोग्राम 8 बज कर 50 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद 9 बज कर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद में पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad